अगस्त 2005
Rs. 12 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मैन के
कारनामे
G-man

चन्दामामा सम्पुट - ५६ अगस्त २००५ संचिका - ८

अंतरंग

विशेष आकर्षण

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

सफलता के लिए आत्मानुशासन

एवरेस्ट शिखर हाल के दिनों में अखबार की सुर्खियों में छाया रहा है। एक समाचार के अनुसार एक हेलिकोप्टर बर्फीली चोटी पर उतारा गया। एक शेरपा इस चोटी पर पन्द्रहवीं बार चढ़ा जो एक बिश्व कीर्तिमान है। पहली बार भारतीय सेना के एक महिला अभियान ने इस चोटी पर चढ़ने में सफलता प्राप्त की। एक नेपाली दम्पति ने इस चोटी के ऊपर अपना परिणय - सूत्र बाँधा। कहा जाता है कि २५ सदस्यों के एक चीनी दल ने इस चोटी को नये सिरे से नापने का प्रयास किया। इस चोटी पर सफलतापूर्वक आरोहण करनेवालों की बढ़ती हुई संख्या को देख कर क्या उन्हें यह लगा कि एवरेस्ट शिखर का आकार सिकुड़ गया है?

जब तक ५२ वर्ष पूर्व इस चोटी पर एडमण्ड हिलैरी तथा तेनजिंग नॉरगे के चरण नहीं पड़े थे, तब तक इस शिखर पर आरोहण एक असम्भव करतब माना जाता था। अब ऐसा नहीं है। पिछले दिनों की सफलताओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि मनुष्य में अपने लक्ष्य पाने का दृढ़ निश्चय हो, यदि वह शारीरिक और मानसिक दुरुस्ती बनाये रखे और यदि मन के झुकाव को योजना और प्रशिक्षण के लिए परिष्कृत करे तब उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। सभी व्यक्तिगत प्रयासों में मन की बड़ी अहम भूमिका होती है। कहावत है - मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। प्रत्येक बालक को योग, एकाग्रता तथा अन्य मानसिक व्यायामों के लिए समय बचा कर एक निश्चित मात्रा में आत्मानुशासन विकसित करना चाहिये। इस प्रकार वह मन को नियन्त्रित कर सकता है।

हमारा महान देश, जो अपनी स्वाधीनता की ५८ वीं वर्षगाँठ मना रहा है, तब स्वस्थ तथा बुद्धिमान नागरिकों के साथ बौद्धिक शक्ति पर गर्व कर सकता है।

सम्पादक : विश्वम

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (जनवरी-'०५)

सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि

बुद्धिमान नाविक

विद्वान नाविक के प्रश्न पर बहुत सोचा। थोड़ी देर में विद्वान सोच-सोच कर थक गया। फिर भी वह नाविक से हार मानने तैयार नहीं था। लेकिन दूसरा कोई चारा नहीं होने पर हिचकिचाते हुए उसने नाविक से कहा, "ऐसे पक्षी को न तो मैं ने देखा है, न ही उसके बारे में सुना है। अतः मैं हार मानता हूँ।" ऐसा कहकर विद्वान ने नाविक को दो रुपये थमा दिए। और कहा - "अब तुम ही बताओ इसका सही उत्तर क्या है? मुझे आश्चर्य है कि ऐसा भी कोई पक्षी होगा !"

विद्वान के हार मानने पर नाविक बहुत खुश हुआ। फिर उसने विद्वान से कहा, "आप तो इतने बड़े विद्वान है । अगर आपको ही इस प्रश्न का उत्तर नहीं मालूम है तो भला मैं एक अनपढ़ नाविक, मुझे इस प्रश्न का उत्तर कैसे मालूम होगा? मुझे भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं मालूम है।" विद्वान ने आश्चर्य से कहा, "क्या तुम्हें भी नहीं मालूम? तुमने मेरे साथ धोखा किया है।" नाविक ने कहा, "मैंने कोई धोखा नहीं किया। मैंने तो आप से सवाल पूछा है। समझौते के अनुसार प्रश्न पूछने के लिए प्रश्नकर्ता को उत्तर मालूम हो, यह ज़रूरी नहीं है। इसलिए इसमें धोखा क्या है। मुझे भी इसका उत्तर नहीं आता है। अतः मैं भी हार मानता हूँ।" यह कहते हुए नाविक ने विद्वान को एक रुपया थमा दिया।

इस प्रकार नाविक ने अपनी बुद्धिमता से एक रुपया विद्वान से जीत लिया। और विद्वान अपनी विद्वता पर शर्म महसूस करता हुआ नाव से उतर कर चलता बना।

प्रेमसिंह चौहान, C/o. श्री मदन सिंह,
सांटरिया बाजार, होली थड़ा वाली गली, भीण्डर (राजस्थान),
जि.उदयपुर-३१३६०३.

लल्लू की अक़्लमन्दी

लक्ष्मीपुर के एक भूस्वामी के यहाँ, लल्लू नामक एक आदमी खेती के कामों के साथ-साथ, शहर जाकर उसके घर के लिए आवश्यक सामान खरीदकर ले आने के काम भी करता रहता था।

गाँववाले कहा करते थे कि लल्लू वाक्पटु है और अक्लमंद भी। पर वह उदास चेहरा लिये कहा करता था, "मैं तो यह जानता नहीं कि जितनी आप मेरी तारीफ़ करते हैं, उतना मैं वाक्पटु व अक्लमंद हूँ या नहीं। आपका कहा अगर सच भी हो तो यह वाक्पटुता व अक्लमंदी जीने की राह में, एक पग भी मुझे आगे नहीं ले जा पायीं। मेरी कोई तरक्की नहीं हो पायी। भूस्वामी जो थोडा-बहुत देते हैं, उसी से पेट भर लेता हूँ। बस, मेहनत किये जा रहा हूँ।"

भूस्वामी के चार बैलों के जोड़े थे। उनमें से बैलों का एक जोड़ा बूढ़ा हो गया था, जिसकी वजह से गाड़ी खींचना, खेत जोतना उनसे हो नहीं पाता था। भूस्वामी ने सोचा कि बैलों का एक और जोड़ा खरीद ही लूँ। इस काम के लिए वह अठारह साल की उम्र के अपने बेटे अर्जुन और लल्लू को लेकर हर मंगलवार को होनेवाले पशुओं की हाट में गया।

हाट का पूरा का पूरा मैदान गायों, बैलों और सुंदर बछड़ों से खचाखच भरा हुआ था। भूस्वामी ने बेटे और लल्लू की सलाह से दो छोटे-छोटे बैल खरीदे और हाँककर घर ले आया।

थोडे ही दिनों में बारिश होनेवाली है, इसलिए अर्जुन बैलों को गाड़ी खींचने और खेती के अन्य काम करने का प्रशिक्षण देने लगा।

लल्लू ने अर्जुन को सावधान करते हुए कहा, "छोटे मालिक, ये दोनों छोटे बैल बहुत चुस्त हैं। आप भी जवान और इन्हीं की तरह चुस्त हैं। इसलिए सावधान रहयेगा।"

दो हफ़्ते गुज़र गये। एक दिन सबेरे अर्जुन

शंभु प्रसाद

उन नये छोटे बैलों की गाड़ी को हांकता हुआ घर लौट रहा था। वह खेतों के बीच के रास्ते से होता हुआ लौट रहा था। रास्ते की एक मोड़ में वे बैल अचानक घबरा गये और सामने से आतेहुए लल्लू पर गाड़ी खींचते हुए चले गये। ऐसे तो उस समय लल्लू को कोई बड़ी चोट नहीं पहुँची, पर वह ज़मीन पर गिरकर हाथ-पैर फैलाकर छटपटाने लगा।

ग्रामीणों ने उसकी यह हालत देखी और वे अर्जुन को कोसते हुए लल्लू को उसके घर ले आये। घर पहुँचने के बाद भी लल्लू कराहने लगा। वह ऐसा देखने लगा, मानों वह किसी को भी पहचान नहीं पा रहा हो। उसकी इस हालत को देखकर ग्रामीण इस निर्णय पर आ गये कि वह कुछ दिनों तक काम करने लायक़ नहीं होगा। उन्होंने भूस्वामी से कहा, ''लल्लू आप ही के भरोसे जी रहा है। दुर्भाग्यवश अब उसकी स्थिति दयनीय है। उसे सहारा देना आपकी ज़िम्मेदारी है।''

भूस्वामी में इस बात का डर पैदा हो गया कि अगर अब लल्लू की देखभाल नहीं करूँगा तो गाँव में बदनामी होगी। इसलिए वह तुरंत लल्लू के घर गया, उसका कुशल-मंगल जाना और उसकी पत्नी को दो हज़ार रुपये देते हुए कहा, ''यह मेरे बेटे के निकम्मेपन की वजह से हुआ है। लल्लू जब फिर से ठीक हो जायेगा तो उसे ऐसे काम करने नहीं होंगे, जिनमें मेहनत करनी पड़े। बस, खेत में काम करनेवालों पर निगरानी रखे तो वही काफी है।''

भूस्वामी की दया पर लल्लू की पत्नी की आँखों में आँसू उमड़ आये। उसके चले जाने के बाद उसने लल्लू से कहा, ''देखा, बड़े मालिक कितने दयालु हैं। अब भी सही, चोट का बहाना छोड़ो और काम पर चले जाओ।''

इस पर लल्लू ने मुस्कुराते हुए कहा, ''अभी से चलना -फिरना शुरू कर दूँ तो ग्रामीण मुझे धोखेबाज ठहरायेंगे। कम से कम एक महीने तक मुझे घर पर आराम करने दो। भूस्वामी अब तक कड़ी से कड़ी मेहनत करवाते थे और देते नहीं के बराबर थे। कंजूस भूस्वामी से ब्याज सहित वसूल कर लिया, यही बहुत बड़ी बात है। जा, अपना काम कर।''

बबूल तालाब की पिशाचिनी

कमला के ससुराल आये एक हफ़्ता भी पूरा नहीं हुआ, पर वह जान गयी कि उसका पति रमेश अव्वल दर्जे का सुस्त है। खेती बाड़ी का काम साठ साल के ससुर माधव ही संभालते हैं।

रमेश देरी से जागता है, खाना खा लेता है और गांव में इधर-उधर मटरगस्ती करने के बाद अंधेरा हो जाने पर खाना खाकर सो जाता हैं।

रमेश की यह दिनचर्या कमला से सही नहीं गयी तो उसने एक दिन पति से कहा, "ससुरजी बूढ़े हो गये हैं। तुम क्यों न खेती-बाडी का काम संभालो और उन्हें आराम करने दो।"

उसकी इस सलाह पर रमेश ठठाकर हँस पड़ा और कहा, "तुम्हारे आने के बाद रसोई का काम उन्हें करना नहीं पड़ रहा है। अब वे आराम ही आराम कर रहे हैं।"

कमला को लगा कि पति से कहने से कोई फ़ायदा नहीं होगा तो उसने सबेरे-सबेरे खेत जाने निकले ससुर से कहा, "अपने बेटे को भी अपने साथ ले जाइये। कब तक आप अकेले ही काम करते रहेंगे?"

माधव ने हँसते हुए कहा, "उसके बचपन में ही उसकी माँ मर गयी, तब से मैंने उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला-पोसा। उससे खेती का काम कराना मुझे अच्छा नहीं लगता। उसे आराम से सोने दो।" कह कर वह खेत चला गया।

उसी दिन शाम को साँप काटने से माधव की मृत्यु हो गई। इसके एक हफ़्ते के बाद भी रमेश की दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

एक दिन खाना परोसती हुई कमला ने रमेश से कहा, "अब भी खेती-बाडी का काम तुम नहीं संभालोगे तो कैसे काम चलेगा? बीज बोने का काम भी शुरू हो चुका है।"

"देखो, आगे से खेती के कामों के बारे में कुछ मत बताना।" चिढ़ते हुए रमेश ने कहा।

राजेश मिश्रा

रमेश गुस्से से उसे देखता रहा और थोड़ी देर बाद घर से चला गया। उसे मालूम ही नहीं हो रहा था कि अंधेरे में वह कहाँ और किस तरफ़ चला जा रहा है।

आखिर वह जंगल से सटे बबूल तालाब के पास आया। तालाब के बाँध पर बबूल के पेड़ बहुत बड़ी संख्या में थे, इसलिए उसका नाम बबूल तालाब पड़ा। बाँध पर कहीं-कहीं जटाओंवाले बरगद के भी वृक्ष थे।

"थोड़ी-बहुत मेरा भी उपजाऊ खेत है। फिर भी रात को कुछ खाये बिना गाँव के बाहर घूमना पड़ रहा है। यह भी कोई ज़िन्दगी है," यों अपने आप को धिक्कारते हुए वह आगे बढ़ता जाने लगा। अचानक उस अंधेरे में वह एक पेड़ से टकरा कर तालाब में जा गिरा।

पर, दूसरे ही क्षण बरगद की एक जटा उसके हाथ लगी। उसकी मदद लेकर वह बाँध पर पहुँच गया। इतने में एक पिशाचिनी ने उससे पूछा, "क्यों मरने पर तुले हुए हो? अगर मैं जटा का सहारा तुम तक नहीं पहुँचाती तो अब तक मर चुके होते।"

पिशाचिनी को देखकर पहले रमेश डर गया पर उसकी बातों ने उसमें धैर्य भर दिया। वह सोचने लगा कि क्या जवाब दूँ, कि इतने में पिशाचिनी ने कहा, "मैं यहाँ बैठी-बैठी भगवान से प्रार्थना कर रही हूँ कि कोई अच्छा काम करके पुण्य कमाऊँ और परलोक सिधारूँ। तुम्हारे कारण मेरी प्रार्थना में रुकावट पैदा हो गयी।"

"तो कैसे घर चलेगा? तुम्हें अवश्य ही बदलना होगा," कमला ने कहा।

"मै बदलनेवाला नहीं हूँ। वे सारे काम खुद संभालो।" यों कहकर खाना खा लेने के बाद वह गाँव में घूमने चला गया।

कमला भौचक्की रह गयी। खूब सोचती रही, पर उसकी समझ में नहीं आया कि पति में परिवर्तन कैसे लाया जाए। इस सोच में रात का खाना पकाना भी भूल गयी। अंधेरा हो जाने के बाद घर में क़दम रखते ही रमेश कहने लगा, "पेट में चूहे दौड़ रहे हैं। तुरंत खाना लगाना।"

कमला ने क्रोध-भरे स्वर में कहा, "तुम खेती-बाडी के काम संभालने से साफ़ इनकार कर रहे हो। मैंने रसोई नहीं पकायी। खेती-बाडी के काम करोगे, तभी खाने को मिलेगा।"

पिशाचिनी की बातों को सुनकर रमेश को लगा कि यह कोई धार्मिक पिशाचिनी है। उसने जान-बूझकर दुख-भरे स्वर में कहा, ''मुझे बचाकर तुमने बड़ा पुण्य किया। मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है। भला मैं अपनी पत्नी का पालन-पोषण कैसे कर पाऊँगा।'' फि र उसने नाटक किया, मानों आत्महत्या करने के लिए वह फिर से तालाब में गिरनेवाला हो।

''ऐसा मत करो। ठहरो'' कहती हुई पिशाचिनी पेड़ पर उड़ी और एक गठरी लाकर रमेश को दी।

''इस धन से आराम से ज़िन्दगी काटूँगा। हम सब लोग तुम्हारे लिए प्रार्थना करते रहेंगे।'' यों कहकर खुशी से रमेश घर की ओर निकला।

घर पहुँचते ही रमेश ने धन राशि की गठरी कमला के सामने फेंक दी और कहा, ''चाहूँ तो क्षण भर में धन कमा सकता हूँ। यह कोई चोरी का माल नहीं है। समझ गयी?'' उसने कहा।

कमला बेहद खुश हुई। पर दूसरे ही दिन रमेश थोड़ी रक़म ले गया और जुए में हार गया।

जब वह घर लौटा तो कमला ने कड़े स्वर में पूछा, ''यों खर्च करते रहोगे तो कैसे घर चलेगा? खेती करने का मन नहीं है तो कोई छोटा-सा व्यापार शुरू कर दो।'' कमला ने सलाह दी।

''कोई सलाह देने लगे तो मैं बहुत नाराज़ हो जाता हूँ। आगे से ऐसा न करना,'' रमेश ने कमला को सावधान करते हुए कहा।

एक महीना पूरा भी नहीं हुआ, पिशाचिनी की दी रक़म खर्च कर दी। रमेश फिर से उस रात

को बबूल तालाब गया और तालाब में कूद पड़ने का नाटक करके पिशाचिनी की दी रक़म लेकर घर लौटा। धन सहित लौटे पति को देखकर कमला स्तंभित रह गयी।

रमेश की आदतें दिन ब दिन बढ़ती ही गयीं। इस बार बीस दिनों में ही पूरी रक़म खर्च कर दी। यह सोच कर कि पति को डाँटने से कुछ नहीं होगा, उसने धीमे स्वर में शिकायत की, ''घर में फूटी कौड़ी भी नहीं है। क्या करें?''

उस रात को फिर से वह बबूल तालाब जाने निकला। कमला ने निश्चय कर लिया कि इस बार उसके पीछे-पीछे जाकर पता लगाऊँगी कि वह धन कहाँ से लाता है। वह एक पेड़ के पीछे छिप कर देखती रही कि रमेश ने पिशाचिनी से कैसे धन प्राप्त किया।

रमेश जैसे ही बाँध पर से उतरा, कमला ने भी तालाब में कूद पड़ने का नाटक किया। पिशाचिनी ने उसे तुरंत रोकते हुए कहा, ''ठहरो, तुम पर ऐसी क्या विपत्ति आन पड़ी, जिसके कारण तुम मर जाना चाहती हो?''

''मेरी विपत्ति की जड़ तुम हो।'' कमला ने कहा। ''मैं तुम्हारी विपत्ति की जड़ हूँ? आख़िर मैंने ऐसा क्या दिया?''

पिशाचिनी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा। ''तुम्हारी बजह से मेरा पति एकदम सुस्त बन गया। व्यसन जो हैं, बे तो हैं ही, साथ ही नये व्यसनों का भी आदी हो गया। अयोग्यों को सहायता पहुँचाने से बढ़कर कोई पाप नहीं होता। क्या तुम इतना भी नहीं जानती हो?'' कमला ने तीव्र स्वर में कहा।

''मैं तो समझ रही थी कि इस बेचारे की सहायता करती हुई पुण्य कमा रही हूँ। पर अब जान गयी कि मुझसे पाप हुआ है। तुम्हीं बताओ अपने इस पाप का प्रायश्चित्त कैसे करूँ?'' पिशाचिनी ने दीन स्वर में पूछा।

तब कमला ने पिशाचिनी को समझाया कि उसका पति तालाब में कूद कर मरने का नाटक कर रहा था। यह भी समझाया कि इस बार वह फिर से आये तो उसे क्या करना चाहिये।

इस बार रमेश ने पंद्रह दिनों के अंदर ही पिशाचिनी की दी रक़म खर्च कर डाली और उस रात को फिर से बबूल तालाब में कूदकर मरने का नाटक यथावत् किया।

पिशाचिनी किकियाती हुई हँस पड़ी और बोली, ''तुम अव्वल दर्जे के सुस्त हो। पत्नी की मेहनत पर जीनेवाले महापापी हो। पानी में डूबकर मरने का नाटक करनेवाले तुम जैसे की रक्षा मैं नहीं, यह पेड़ ही करेगा। तुम भी पिशाच बनकर इसी पेड़ में निवास करोगे।'' कहती हुई वह अंधकार में बिलीन हो गयी।

पिशाचिनी की बातें सुन कर रमेश भय से काँप उठा। दूसरे दिन सबेरे-सबेरे अपने पति को खेती के काम पर जाते हुए देख कर कमला बहुत प्रसन्न हुई और बबूल तालाब की पिशाचिनी के प्रति उसने मन ही मन कृतज्ञता प्रकट की।

भल्लूक मांत्रिक

22

(सामंत सूर्यभूपति अपने क़िले की रक्षा करने गया। माया मर्कट भी क़िले की दीवार फांदकर बाहर चला गया। भल्लूक मांत्रिक अपने गुरु को ख़तरे में देख सुरंग मार्ग में प्रवेश करने जा रहा था, तब बधिक भल्लूक ने उसे रोका। मांत्रिक उसे नगर का बधिक बताते उसके सर पर मंत्रदण्ड छुआकर सुरंग के भीतर चला गया। उसके बाद...)

भल्लूक मांत्रिक के चले जाने पर राजा जितकेतु कालीवर्मा की ओर देख बोला, ''बताओ, इस वक़्त हमारा कर्तव्य क्या है? मैंने आप सब के सामने सूर्यभूपति की पुत्री को अपनी दत्तक पुत्री घोषित किया। अब माया मर्कट के गुरु मिथ्या मिश्र से उसकी रक्षा करनी है न? क्या हम लोग सैनिकों के साथ जंगल की ओर चलें ?''

''महाराज, हमलोग अपने साथ सैनिकों को लेकर कोलाहल मचाते जंगल में प्रवेश करेंगे तो उस तांत्रिक को पहले ही पता चल जाएगा।'' यों सावधान कर कालीवर्मा वहाँ से चल पड़ा।

इस बार कालीवर्मा, बधिक तथा राक्षस उग्रदण्ड भी पैदल चलकर जब जंगल में पहुँचे तब उन्हें एक जगह बहुत बडा भालू दिखाई दिया। वह थोड़े से कंद-मूल और फलों को जंगली लताओं से बांधकर कंधे पर डाल चल रहा था।

कालीवर्मा उसे देख बोला, ''उग्रदण्ड, यह कैसा अनोखा दृश्य है?''

''इसमें आश्चर्य की क्या बात है? वह भालू उस दुष्ट तांत्रिक मिथ्या मिश्र का पालतू जानवर होगा। हम लोग चुपचाप उसका अनुसरण करते जायेंगे तो हमें उस तांत्रिक का पता चल जाएगा।'' राक्षस उग्रदण्ड ने जवाब दिया।

इसके बाद वे तीनों भालू के पीछे थोड़ी दूर चले, तब उन्हें एक पेड़ के नीचे भल्लूक मांत्रिक तथा सफ़ेद दाढ़ीवाला एक दुबला-पतला वृद्ध दिखाई दिया। उसके कंठ में एक रुद्राक्ष मा ला पड़ी थी। सामंत उनसे बातचीत कर रहा था।

कालीवर्मा को दूर से देखते ही भल्लूक मांत्रिक बोला, ''हे मेरे शिष्य कालीवर्मा, ये ही मेरे गुरु भल्लूकपाद हैं। सूर्यभूपति की पुत्री कांचनलता को तांत्रिक मिथ्यामिश्र क़िले से अपहरण करके ले गया है। अब तुम क्या करने जा रहे हो?''

भालू पर परशु का प्रहार करने की ताक में चलनेवाला नगर बधिक अपने परशु को झट से कंधे पर रख कर बोला, ''ओह, तब तो य ह भल्लूकपाद का पालतू जानवर है! बच गया है।''

इस पर भल्लूक मांत्रिक उनके समीप आकर बोला, ''हाँ, अब मैं समझ गया कि मेरे गुरुजी का पालतू भालू आप लोगों को यहाँ पर ले आया है। वह तांत्रिक मेरे गुरु को भल्लूकेश्वरी के मंदिर के सामने पेड़ से बांध भूखा रखकर उनकावध करना चाहता है। मगर स्वामिभक्त भालू ने उनके बंधन खोलकर उनकी रक्षा की है।''

ये बातें सुनने पर वृद्ध भल्लूकपाद की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देखते हुए उग्रदण्ड ने पूछा, ''बताओ, मेरे भाई कालदण्ड कहाँ पर हैं?''

भल्लूकपाद ने निर्भयतापूर्वक एक बार अपनी रुद्राक्ष माला की ओर नज़र डाली, तब मुस्कुरा कर कहा, ''यह सवाल तुम्हें मुझ से नहीं, बल्कि तांत्रिक मिथ्यामिश्र से करना होगा? वह जड़ी-बूटियों द्वारा तुम्हारे भाई को गूँगा बनाकर उसका उपयोग पालतू पशु के रूप में कर रहा है। अगर इस जंगल में तुम उसे पकड़ सकोगे तो तुम्हारे भाई कालदण्ड के साथ राजकुमारी कांचनलता भी तुम्हारे हाथ लग सकती है। तुम लोगों में क्या कोई ऐसा साहसी व्यक्ति भी है?''

ये बातें सुन कालीवर्मा ने अपनी तलवार की मूठ पर हाथ धरकर कहा, ''वह साहस मैं करूँगा! साथ ही कांचनलता को बचाने के साथ उस तांत्रिक और तुम्हें भी अपनी तलवार क ी बलि चढ़ाऊँगा। मंत्र-तंत्र जाननेवाला कोई भी दुष्ट इस

प्रदेश में ज़िंदा न रह सकेगा।'' इस पर भल्लूक मांत्रिक दांत भींचते अपने मंत्रदण्ड को ऊपर उठाने को हुआ, तब सामंत सूर्यभूपति उसे रोकते हुए बोला, ''कालीवर्मा, ये भल्लूकपाद और इनके शिष्य भल्लूक मांत्रिक हमारे दुश्मन नहीं हैं। शंख बजाते माया मर्कट को अपने गुरु तांत्रिक मिश्र के पास आने की चेतावनी देनेवाले उनके सेवक को बन्दी बनाने में इन लोगों ने मेरी बड़ी सहायता की है। लो, देखो, वह शंख और वह सेवक। इसको मैंने खूब सताया, फिर भी इसने अपने मालिक का पता नहीं दिया, इस पर उस दुष्ट को मैंने अपनी तलवार की बलि चढ़ा दी।''

कालीवर्मा ने उस शंख को दूर फेंककर कहा, ''राजा सूर्यभूपति! आपको सबसे पहले अपनी पुत्री का अपहरण करनेवाले मिथ्यामिश्र की बलि चढ़ानी थी। अच्छी बात है। हम लोग चारों तरफ़ फैलकर उस तांत्रिक की खोज करेंगे।'' यों कहते कालीवर्मा वहाँ से चल पड़ा।

इसके बाद भल्लूकपाद भालू पर सवार हुआ, तब उसके एक तरफ़ उसका शिष्य भल्लूक मांत्रिक और दूसरी ओर राक्षस उग्रदण्ड, बधिक तथा सामंत पैदल जंगल की ओर चल पड़े।

कालीवर्मा रास्ते में पद-चिन्हों की खोज करता रहा। एक जगह से साधारण मनुष्यों के पद-चिन्हों के साथ उससे दुगुने-तिगुने पैरों के निशान भी दिखाई दिये। तब उसे तत्क्षण तांत्रिक के साथ रहनेवाले उग्रदण्ड के भाई कालदण्ड राक्षस की याद हो आई।
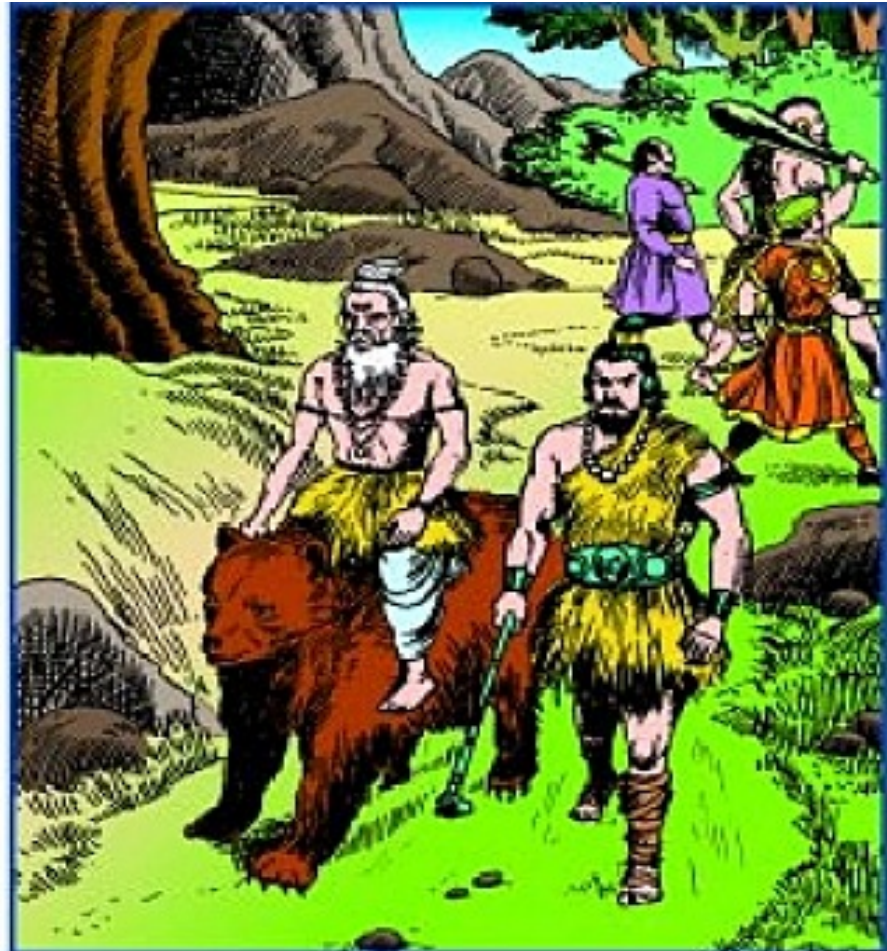
कालीवर्मा यह सोचते झाड़ियों की ओट लेकर आगे बढ़ा कि समीप में ही तांत्रिक अपना निवास बनाये रहता होगा। थोड़ी दूर और आगे बढ़ने पर उसे एक बहुत बड़ा सरोवर और उसमें गिरनेवाला एक झरना दिखाई दिये। उस झरने के किनारे एक त्रिशूल ज़मीन में गाड़ रखा गया था। सरोवर में एक दृढ़ काय व्यक्ति खड़े हो आँखें बंद करके मंत्र जाप रहा था।

वह व्यक्ति तांत्रिक मिथ्यामिश्र था। यह बात कालीवर्मा ने झट भांप ली। तब क्रोध में आकर उच्च स्वर में बोला, ''अरे, तुम्हीं हो न तांत्रिक मिथ्या मिश्र? तांत्रिक को मंत्रों से क्या मतलब है? तुम सूर्य भूपति की कन्या का अपहरण कर ले आये, वह कहाँ है?''

मंत्र पठन करनेवाले मिथ्यामिश्र ने झट से आँखें खोल कालीवर्मा की ओर परख कर देखा,
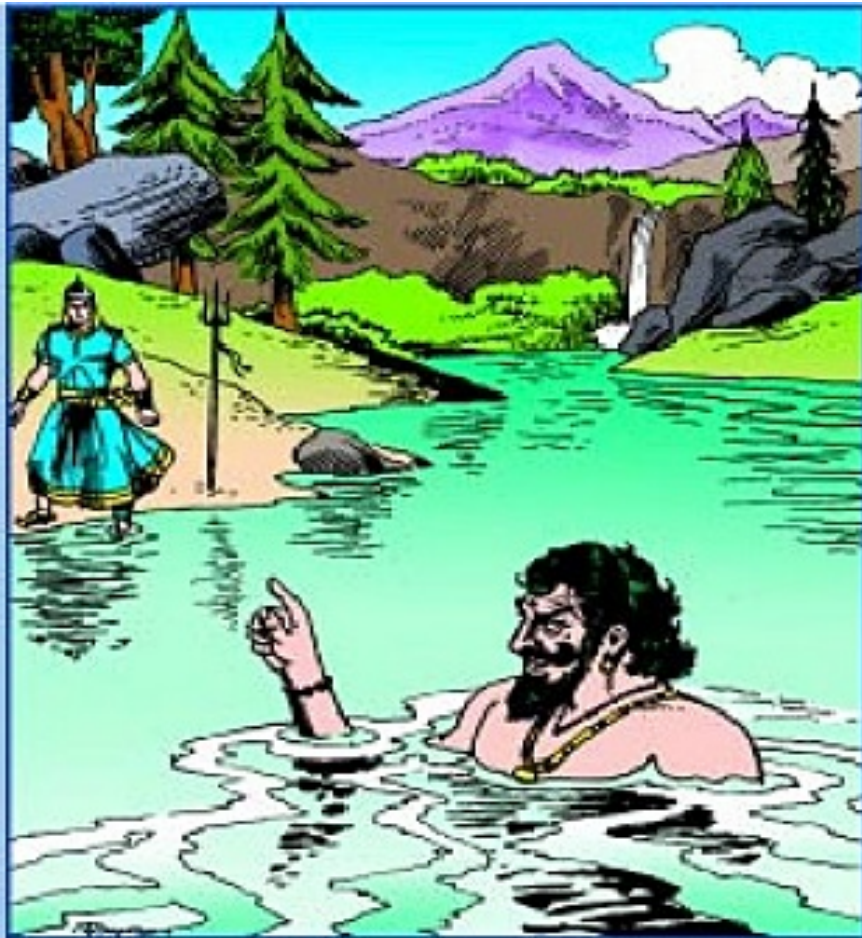
तब पूछा, "तुमने मेरा नाम कैसे जान लिया? निश्चय ही तुम अक्लमंद हो! मेरे शिष्य भ्रांतिमति ने मुझे बताया कि मेरे शंख को ढोनेवाले सेवक को जंगल में किसी ने मार डाला है। वह व्यक्ति तुम तो नहीं हो?"

"यह बात मैं फिर बता दूँगा। यह बताओ, तुमने कांचनलता को कहाँ पर छिपा रखा है?" यों कहते कालीवर्मा तलवार चलाने को हुआ, तब पेड़ की डालों पर बैठा माया मर्कट 'किच' 'किच' करते चिल्ला उठा, "तांत्रिक गुरु! यही कालीवर्मा है। यह जन्मजात पराक्रमी है। इसी वक़्त इसके प्राण लेना हमारे लिए हितकर है।" ये शब्द कहते वह डाल पर से कालीवर्मा के समीप कूदने को हुआ, पर कालीवर्मा को अपनी तलवार खींचने का मौक़ा न मिला, इस कारण उसने झट से अपने समीप में स्थित त्रिशूल को माया मर्कट की ओर उठाया। माया मर्कट जो ठीक उसी वक़्त डाल पर से तेज़ गति के साथ नीचे आ रहा था, त्रिशूल से जा टकराया।

जिससे उसके शरीर में त्रिशूल धंस गया, वह असहनीय पीड़ा के साथ हाथ-पैर पटकते चिल्ला उठा, "तांत्रिक गुरु की जय! आप की सेवा करने का भाग्य मुझे फिर परलोक में ही प्राप्त होगा!"

इसके बाद कालीवर्मा ने इतमीनान से अपने म्यान से तलवार खींच ली, निश्चेष्ट हो खड़े तांत्रिक से बोला, "अरे कमबख़्त तांत्रिक! तुम जिस भल्लूकेश्वरी की पूजा कर रहे हो, उसी के नाम मैं तुम्हें अपनी तलवार की बलि चढ़ाने जा रहा हूँ! लेकिन इसके पूर्व मुझे बता दो कि कांचनलता को कहाँ पर छिपा रखा है?"

इस पर तांत्रिक मंदहास कर उठा; तब अपने हाथ फैलाकर मुट्ठियाँ खोलते व बंद करते अपने सर को इधर-उधर हिलाने लगा। उसके इस विचित्र व्यवहार पर आश्चर्य करते हुए कालीवर्मा सरोवर में उतरने को हुआ, पर ठीक उसी समय पीछे से उसे एक नारी का कंठ सुनाई पड़ा, "हे युवक! सावधान रहिए! तांत्रिक एक गूँगे राक्षस को इशारा कर रहा है।"

यह आवाज़ सुनकर कालीवर्मा ने बिजली की गति के साथ मुड़कर पीछे की ओर देखा। तब उग्रदण्ड राक्षस की आकृतिवाले एक और राक्षस ने एक युवती को अपने कंधों पर से नीचे उतारकर जंगली हाथी जैसे एक बार हुंकार किया, तब अपना पत्थरवाला गदा उठाकर कालीवर्मा

की ओर बढ़ा। कालीवर्मा झट से उसके रास्ते से हट गया, तब राक्षस सरोवर के किनारे की कीचड़ में पैर फिसलने से पानी में औंधे मुँह गिर पड़ा। उसके हाथ का पत्थरवाला गदा छूटकर किनारे ही रह गया।

राक्षस इस बार और ज़ोर से गरज उठा, अपनी कुहनियों को ज़मीन पर टिकाकर उठने को हुआ, तब कालीवर्मा ने उछलकर पत्थरवाले गदे को अपने हाथ में लिया और राक्षस पर उसका प्रहार किया। राक्षस भीषण ध्वनि के साथ सरोवर के किनारे अचेत-सा गिर पड़ा।

इस बीच तांत्रिक मिथ्यामिश्र भाग जाने के ख़्याल से चारों ओर नज़र दौड़ा रहा था, उस पर कालीवर्मा ने तीक्ष्ण दृष्टि डाली, तब राक्षस के द्वारा लाई गई युवती को देख पूछा, ''तुम्हीं हो न सूर्यभूपति की पुत्री कांचनलता?''

युवती ने स्वीकृति सूचक सर हिलाया, तब बोली, ''लगता है कि तांत्रिक के दोनों सेवक मर गये हैं, पर उसे प्राणों के साथ नहीं छोड़ना चाहिए! मेरे हाथ में कोई हथियार नहीं है ! तुम अपनी तलवार मुझे दे दो और गूँगे राक्षस का गदा तुम ले लो। हम दोनों इस दुष्ट तांत्रिक का शिकार खेलेंगे।''

ये बातें सुन कालीवर्मा बड़ा खुश हुआ, अपनी तलवार कांचनलता के हाथ दे दी। वह खुद पत्थरवाला गदा अपने कंधे पर रखकर सरोवर के पानी में उतरकर तांत्रिक की ओर बढ़ने लगा। तब राजा जितकेतु अपने दो सैनिकों के साथ वहाँ आ पहुँचा, उच्च स्वर में बोला, ''कालीवर्मा, यह तो मगरमच्छोंवाला तालाब है! तुम तुरंत किनारे आ जाओ। इस तांत्रिक का बध करने के लिए मेरे सैनिक, नगर का बधिक और राक्षस उग्रदण्ड पीछे चले आ रहे हैं।''

फिर विस्मय के साथ चतुर्दिक देखनेवाली कांचनलता के समीप जाकर बोला, ''बेटी, तुम मेरी दत्तक पुत्री हो। इस कारण अपनी पसंद के युवक के साथ तुम्हारा विवाह करने का मुझे हक़ है! ठीक है न।''

ये बातें सुन कांचनलता लज्जा के मारे सिर झुकाकर जड़वत् खड़ी रह गई। उसी वक़्त वहाँ पर सामंत सूर्यभूपति के साथ हाथी पर सवार हो भल्लूकपाद, भल्लूक मांत्रिक, नगर का बधिक और राक्षस उग्रदण्ड भी आ पहुँचे।

सूर्यभूपति अपनी पुत्री के निकट जाकर बोला,

''बेटी, मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम्हें प्राणों के साथ फिर से देख सकूँगा!'' फिर कालीवर्मा की ओर मुड़कर बोला, ''कालीवर्मा, तुम महान वीर हो! इसमें थोड़ा भी संदेह नहीं है!''

इसके बाद राजा जितकेतु हँसते हुए कालीवर्मा का हाथ पकड़कर उसे कांचनलता के पास ले गया और बोला, 'मैं अपनी दत्तक पुत्री कांचनलता का विवाह इस क्षत्रिय युवक कालीवर्मा के साथ आप सब लोगों के सामने कर रहा हूँ, मेरे अनंतर यही युवक चन्द्रशिला नगर का राजा बनेगा।''

इस पर सबने हर्षनाद किये, तभी सरोवर में से एक भयंकर चीख़ सुनाई दी, सबने उस ओर अपनी दृष्टि दौड़ाई! देखते क्या हैं? एक बहुत बड़ा मगरमच्छ तांत्रिक मिथ्यामिश्र को पकड़ चुका है और तांत्रिक उससे बचने के लिए खींचा-तानी कर रहा है! इसे देख भल्लूक मांत्रिक उत्साहपूर्वक अपने मंत्रदण्ड को ऊपर उठाकर हिलाते हुए गरज उठा, ''भल्लूकपाद गुरु! अब आप ही भल्लूकेश्वरी के प्रधान पुजारी हैं ! आप का दुश्मन मगरमच्छ का आहार बनने जा रहा है!''
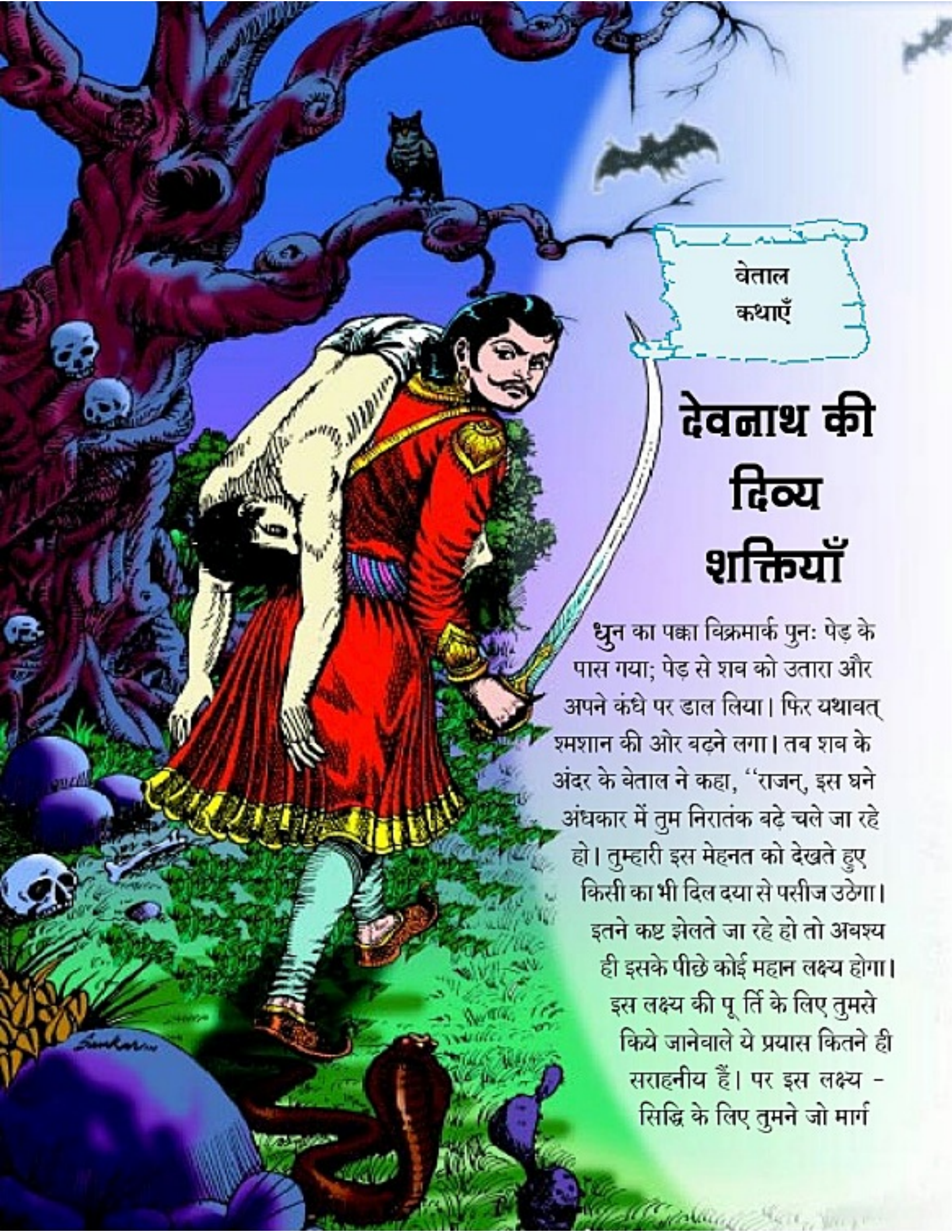
इसके बाद मगरमच्छ तांत्रिक मिथ्यामिश्र को अपने मुँह में दबाये सरोवर के जल में डूब गया। तब राक्षस उग्रदण्ड तालाब के किनारे पहुँचा, वहाँ पर गिरे हुए कालदण्ड राक्षस को उठाकर बोला, ''भैया! आज तक तुम को तंग करनेवाला वह तांत्रिक मगरमच्छ के मुँह में चला गया है। अब तुम उठ जाओ।''

इस पर राक्षस कालदण्ड झट से उठ खड़ा हुआ, अपने दोनों हाथों से कंठ पकड़कर सरोवर की ओर देखते चीख़कर बोला, ''मेरे छोटे भाई उग्रदण्ड! क्या वह तांत्रिक मर गया है? उसने मुझे जो जहरीली औषधियाँ खिलाईं, उनकी वजह से मैं गूँगा बन गया था। मुझ जैसे बलवान राक्षस का सामना कर मुझे बेहोश बना देनेवाला वह महान वीर कहाँ है?'' यों पूछते वह बड़े-बड़े डग भरते आगे बढ़ा और कालीवर्मा तथा उसकी बगल में खड़ी कांचनलता को भी उठाकर अपने कंधों पर बिठा लिया।

इस पर भल्लूक मांत्रिक के साथ सब ने परमानंदित होकर हर्ष ध्वनि की। ***(समाप्त)***

वेताल कथाएँ

देवनाथ की दिव्य शक्तियाँ

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, इस घने अंधकार में तुम निरातंक बढ़े चले जा रहे हो। तुम्हारी इस मेहनत को देखते हुए किसी का भी दिल दया से पसीज उठेगा। इतने कष्ट झेलते जा रहे हो तो अवश्य ही इसके पीछे कोई महान लक्ष्य होगा। इस लक्ष्य की पू र्ति के लिए तुमसे किये जानेवाले ये प्रयास कितने ही सराहनीय हैं। पर इस लक्ष्य - सिद्धि के लिए तुमने जो मार्ग

चुना, उसका भी महान होना, उत्तम स्तर का होना नितांत आवश्यक है। तभी तुम्हारी लक्ष्य सिद्धि सार्थक कहलायेगी। इस धर्म सूत्र को व सक्षमता को पहचानने के बाद, योगी देवनाथ ने जल्दबाजी में जो निर्णय लिया, वह पूर्णतया असंगत था। इस कारण से उसका परिणाम भी बुरा व अशुभ ही निकला। तुम्हें सावधान करने के लिए उस योगी की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनो।'' फिर वेताल योगी देवनाथ की कहानी यों सुनाने लगाः

एक समुद्र के तट पर सिंगबर नामक एक गाँव था। उस गाँव के निकट के जंगल में योगी देवनाथ ने आश्रम की स्थापना की और ज़रूरत पड़ने पर लोगों की सहायता करने लगा। बहुत-से लोगों का विश्वास था कि उनके पास कितनी ही दिव्य शक्तियाँ हैं।

सिंगबर गाँव में और उसके आसपास के प्रदेश में समय पर वर्षा होती थी और अच्छी फसलें भी होती थीं। ग्रामीणों को इस बात पर आनंद होता था कि उनके परिश्रम का फल उन्हें मिल रहा है। बलराज नामक एक स्वार्थी हाल ही में उस गाँव का ग्रामाधिकारी बना। धनार्जन के लिए उसने शराब की दुकानें व जूए के अड्डे खोले। इस वजह से गाँव के युवक बुरी आदतों के शिकार हो गये।

गाँववालों ने बलराज को इसपर आपत्ति जताते हुए चेतावनी दी। परंतु बलराज ने उनसे कहा, ''समय बदलता जा रहा है। उसके साथ -साथ हमें भी बदलना चाहिये। अधिकाधिक संख्या में ग्रामीणों ने इसकी मांग की, इसीलिए मैंने यह प्रबंध किया।''

बलराज के इस काम से खुश लोगों में से गिरिराज नामक एक किसान भी था। मालती उसकी पत्नी थी। सहदेव और रमानाथ उसके बेटे थे। बड़ा बेटा सहदेव अच्छे स्वभाव का था। गाँव के सब सुशील युवक उससे दोस्ती करते थे। दूसरा बेटा रमानाथ अल्हड था, ग़ैरज़िम्मेदार था। ऐसे युवकों का वह नेता था।

उनके माता-पिता रमानाथ को लेकर बहुत चिंतित रहते थे । सहदेव उन्हें शांत करने के उद्देश्य से कहा करता था, ''भाई अभी छोटा है। उसकी देखभाल की ज़िम्मेदारी मुझपर छोड़

दीजिये।'' सहदेव, अपने दोस्तों की सहायता से हरि कथाओं व नाटकों का प्रबंध करता था। उनके द्वारा वह लोगों को समझाने की कोशिश करता था कि मदिरा स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर डालती है, जुए से क्या-क्या हानियाँ होती हैं। पौराणिक कथाओं के रूप में वह यह प्रयास करता था।

बडे भाई सहदेव के ये काम छोटे भाई रमानाथ को कतई पसंद नहीं थे। इसके बारे में उसने अपने दोस्तों से चर्चा की। उन्होंने कहा, ''तुम्हारा भाई अच्छा नाम कमा रहा है। अगर हम लोगों से तुम्हारे भाई के विरुद्ध कुछ कहें तो वे हमपर नाराज़ हो उठेंगे। इस वि षय में ग्रामाधिकारी बलर ाज ही हमारी मदद कर सकते हैं।''

उधर बलराज भी सहदेव के प्रचार रोकने के लिए उपाय सोच रहा था। रमानाथ जैसे ही अपने दोस्तों को लेकर उसके घर आया, उसने कहा ''वज्र को वज्र से ही काटना चाहिये। कांटे को कांटे से ही निकालना चाहिये। हम सहदेव की अच्छाई को ही उपयोग में लायेंगे और उससे ऐसा काम करवायेंगे, जिससे गाँव के सभी लोग उससे घृणा करें।'' यों कहते हुए उसने विस्तारपूर्वक एक योजना भी बतायी।

उसके कहे मुताबिक रमानाथ का एक दोस्त साधु के वेष में सहदेव से मिला और कहा। ''मैंने सुना कि तुम्हारे परिवार के सब सदस्य रमानाथ को बहुत चाहते हैं। मुझे यह भी मालूम हुआ कि वह एकदम नटखट और ग़ैरज़िम्मेदार है। उसे सुधारना हो तो बड़ी हिम्मत का काम करना होगा। करोगे?''
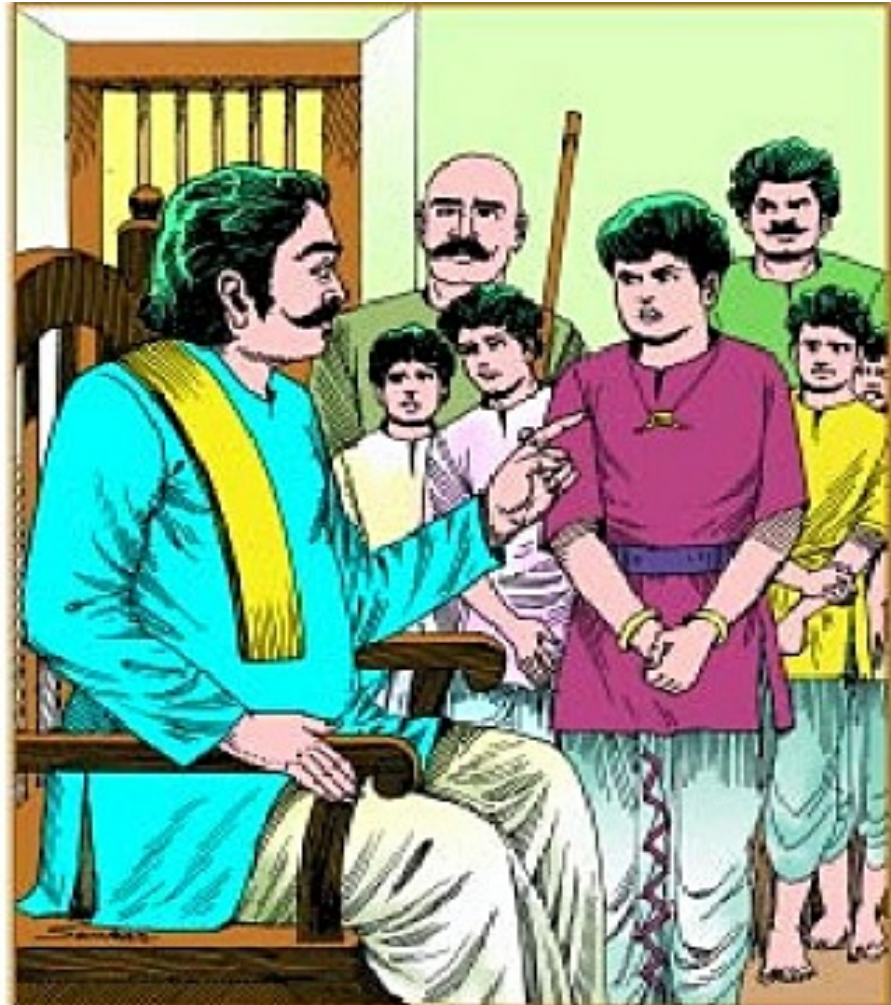
सहदेव ने तुरंत अपनी सहमति दी।

''ठीक है, आज ही आधी रात को अकेले राम के मंदिर में चले जाना। गर्भगृह में मुकुटधारी श्री रामचंद्र की मूर्ति है। उस मुकुट को घर ले आना और सोते हुए अपने भाई के सिर पर थोड़ी देर तक रखना। फिर मुकुट को ले आना और भगवान के सिर पर यथावत् रख देना। पर यह सारा काम रहस्यपूर्वक हो। ऐसा करने पर, तुम्हारा छोटा भाई श्री रा मचंद्र से भी अधिक महान व गुणवान होगा।''

सहदेव ने कपटी साधु की बातों का विश्वास किया। उसी रात को वह राम के मंदिर में गया। बलराज की योजना के अनुसार मंदिर के दरवाज़े
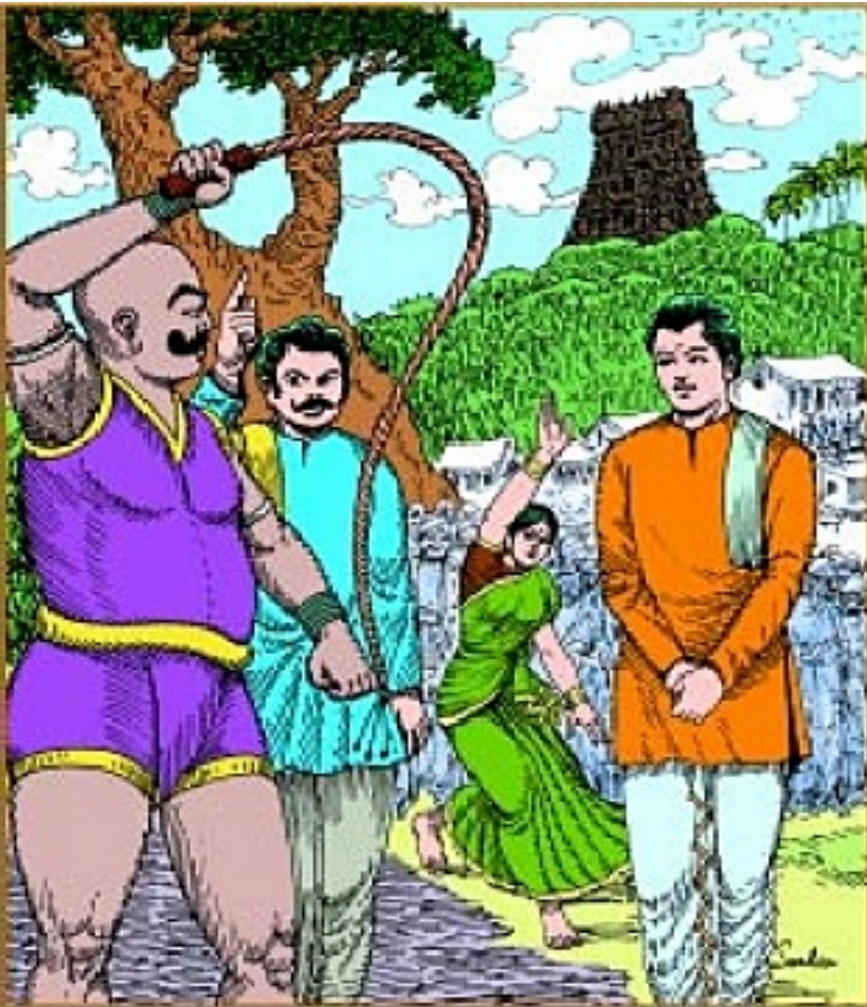
खुले थे। इससे सहदेव को लगा कि भगवान राम इस काम में उसकी सहायता कर रहे हैं। उसने मूर्ति को प्रणाम किया और मुकुट निकाला। बस, देखते-देखते रमानाथ के दोस्त और ग्रामाधिकारी बलराज वहाँ पहुँच गये। मुकुट को हाथ में लिये हुए सहदेव को उन्होंने पकड़ लिया।

बलराज ने प्रश्नों की बौछार कर दी तो सहदेव यही कहता हुआ चुप रह गया कि यह सब मेरा दुर्भाग्य है।

दूसरे ही दिन राम के मंदिर में सभी ग्रामीणों को बुलाया गया। बलराज ने सहदेव को सबके सामने दोषी ठहराया और श्री राम के मुकुट को चुराने के अपराध में उसे पचास कोड़े मारने की सज़ा सुनायी।

सहदेव की माँ को जैसे ही यह बात मालूम हुई, वह कांपती हुई बेटे के पास आयी और बोली, ''बेटे, तुम अच्छे हो। तुम कभी भी ग़लत काम नहीं करते। तुमने भगवान का मुकुट लिया। तो अवश्य ही इसके पीछे कोई सबल कारण होगा। मैं यह दृश्य नहीं देख सकती। ऐसा तुमने क्यों किया, बताना।'' अपने दुख को रोकते हुए उसने पूछा।

सहदेव पर माँ की बातों का कोई असर नहीं पड़ा। उसने शांत स्वर में कहा, ''माँ, मेरा विश्वास करो। भगवान का मुकुट मैंने क्यों लिया, अगर यह बता दूँ तो इससे गाँव का अमंगल होगा।''

उसकी बातों पर बलराज ने ठठाकर हँसते हुए कहा, ''यह अपनी मायावी बातों से हमें विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा है। अच्छाई का मुखौटा पहना हुआ दुष्ट है यह। तुरंत इसकी सज़ा अमल में लायी जाए,'' कहते हुए उसने एक बलवान के हाथों में कोड़ा थमा दिया।

मालती, सहदेव के सामने खड़ी हो गयी और बोली, ''मेरे बेटे ने जिस गाँव के लिए अमंगल रोकना चाहा, वही गाँव उसे सज़ा दे रहा है। गाँव का अमंगल होकर ही रहेगा, यह मेरा शाप है,'' ज़मीन को अपने पैरों से रौंदती हुई बोल उठी।

दूसरे ही क्षण वहाँ की भूमि कांप उठी। गाँव के सबके सब घर गिर गये। पास का समुद्र उमड़ा और गाँव को डुबो दिया।

थोड़ी देर बाद जब उपद्रव शान्त हो गया, बचे-खुचे लोग एक जगह पर इकट्ठे हो गये। उनमें सहदेव के पिता के परिवार के सदस्य भी थे।

''पूरी भूमि नमकीन हो गयी। कुछ सालों तक यहाँ की भूमि खेती के लायक़ नहीं होगी। सहदेव के विषय में हमसे भारी भूल हो गयी। हम सबके सब समुद्र में डूबकर मर जाएँ, यही हमारे लिए एकमात्र मार्ग है।'' एक ग्रामीण ने पश्चाताप-भरे स्वर में कहा।

तब मालती ने कहा, ''इस विपत्ति में कितने ही लोग मर गये। सिर्फ हमलोग बच गये। दिव्याराम के योगी देवनाथ के पास जाएँगे। वे ही कोई उपाय सुझायेंगे।''

सबने अपनी सहमति जतायी। अपने पास आये ग्रामीणों का दुखड़ा सुनने के बाद योगी देवनाथ ने कहा, ''तुम्हारे गाँव को निवास योग्य बनाने की शक्तियाँ मेरे पास हैं। परंतु उन्हें पाने के लिए कुछ योग्यताओं की आवश्यकता है। वे शक्तियाँ उसी व्यक्ति-विशेष को प्राप्त होंगीं, जिसने कभी कोई बुरा काम नहीं किया हो। ऐसे उत्तम व्यक्तियों में से सहदेव ही एकमात्र व्यक्ति है। वही तुम्हारे गाँव को फिर से सुभिक्ष बना सकता है।''

यह सुनते ही सहदेव का छोटा भाई रमानाथ आगे आया और कहने लगा, ''योगिवर, मेरे बड़े भाई ने हमारे गाँव के राम मंदिर से भगवान के मुकुट की चोरी की। इस चोरी के पीछे उसका स्वार्थ है। यह जानते हुए भी आप उसे उत्तम और योग्य व्यक्ति ठहरा रहे हैं। क्या आपका यह निर्णय समुचित और न्यायसंगत है?''

देवनाथ ने रमानाथ को ध्यान से देखते हुए कहा, ''सब कुछ भली-भांति जानता हूँ। सहदेव में दिव्य शक्तियाँ पाने की पूरी योग्यताएँ हैं।'' यों
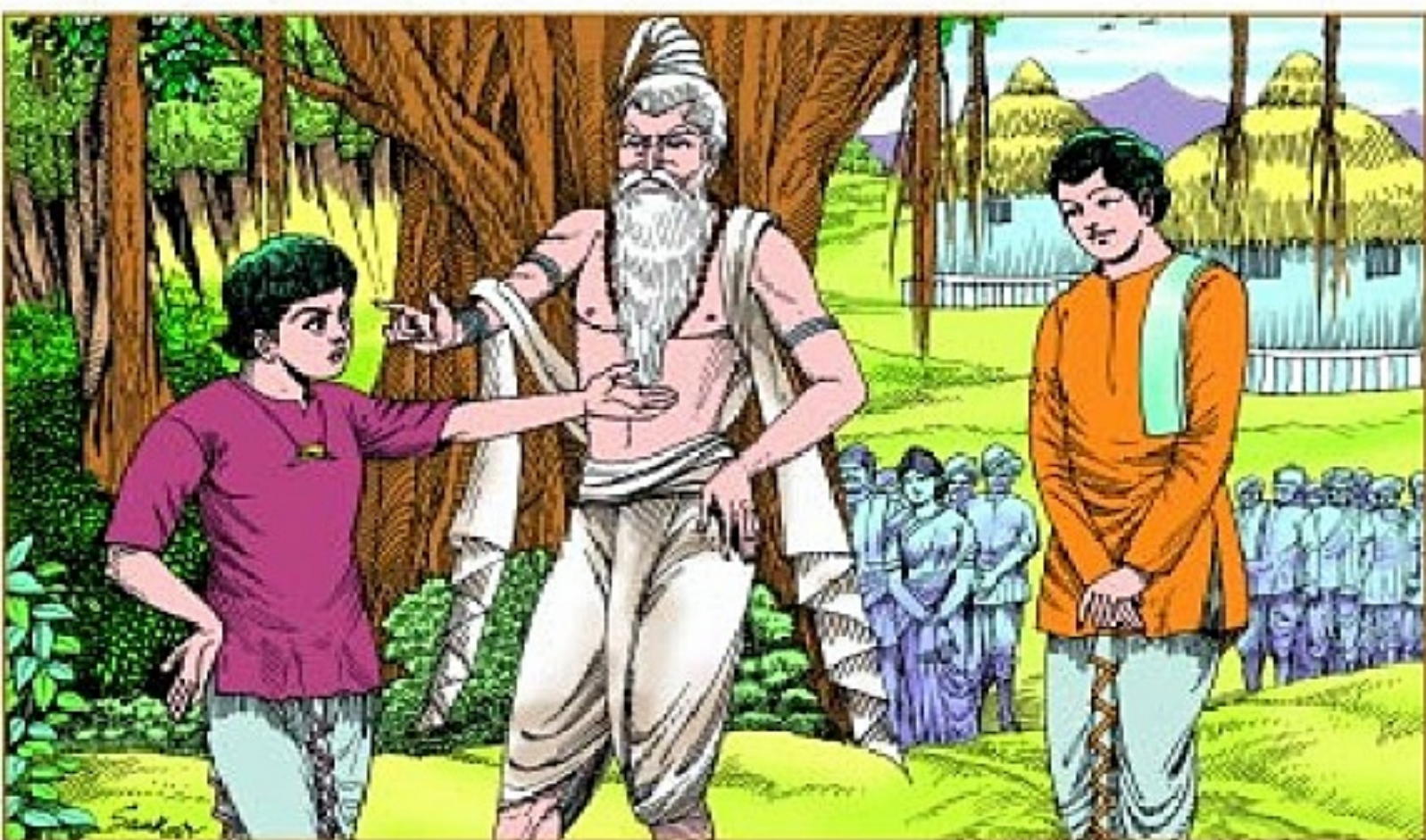
कहकर देवनाथ ने सहदेव को अपने पास बुलाया और अपनी दिव्य शक्तियाँ उसे सौंपीं।

वेताल ने यह कहानी सुनायी और फिर कहा, ''राजन्, क्या आपको लगता नहीं कि दिव्य शक्तियाँ पानेवाले के विषय में देवनाथ से भूल हो गयी? अपने सगे भाई को सन्मार्ग पर ले आने के लिए उसने भगवान के मुकुट को अपने घर ले जाना चाहा। यह स्वार्थ, दुस्साहस और अपचार नहीं तो और क्या है? भला यह एक उत्तम मनुष्य का लक्षण कैसे हो सकता है? एक अच्छे कार्य को साधने के लिए बुरा मार्ग अपनाना सही है? दिव्य शक्तियाँ उसे सौंपकर देवनाथ ने क्या पक्षपात नहीं दिखाया? मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''सहदेव के भाई रमानाथ को बलराज अपने स्वार्थ के लिए उपयोग में ले आया। रमानाथ को सन्मार्ग पर ले आया जाए तो उसके और उसके दुष्ट दोस्तों के खेल को खत्म किया जा सकता है। अपने भाई को सन्मार्ग पर ले आना उत्तम कार्य है। उसने मुकुट की चोरी नहीं की। उसे अपने भाई के सिर पर रखकर, फिर से यथावत् उसी स्थान पर रखने का उसका आशय था। इसी उद्देश्य से वह मंदिर में गया और बलराज के षडयंत्र का शिकार बना। फिर भी उसे इस बात पर विश्वास था कि रहस्य खोलने पर गाँव का अमंगल होगा। दोषी न होते हुए भी वह दंड भुगतने के लिए सन्नद्ध हो गया। यह उसके निस्वार्थ तथा त्याग गुण का परिचायक है। अच्छे-बुरे कार्य का निर्णायक होता है, मन का उद्देश्य, न कि वह काम, जो उसे करता है। इसलिए सहदेव की चर्या में दैव अपचार है ही नहीं। योगी देवनाथ यह संपूर्ण रूप से जानते हैं, इसीलिए उन्होंने अपनी शक्तियाँ उसके सुपुर्द कीं। इसमें न ही कोई पक्षपात है, न ही त्रुटि।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल ग़ायब हो गया और शव सहित पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः ''वसुंधरा'' की रचना)

मुगल लघु चित्रकला

मुगल शासकों के द्वारा ही लघु चित्रकला भारत में आई।

शेरशाह सूरी से हार कर सम्राट हुमायूँ फारस (आधुनिक ईरान) भाग गये। एक साल से पहले जब वे भारत लौटे तब दो फारसी कलाकार साथ में थे - अब्दुस समद तथा मुल्ला दोस्त मुहम्मद।

बाल राजकुमार अक़बर को शिक्षा देने के अतिरिक्त दोनों कलाकारों ने लघु चित्रकला की प्रविधि हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों के कलाकारों को सिखाई।

अक़बर ने उनकी प्रतिभा का उपयोग हमजा – नामा के फारसी अनुवाद के चित्रण के लिए किया। यह कार्य १५ वर्षों में ख़त्म हुआ और पाण्डुलिपि के १२ ग्रन्थों में एक हज़ार चित्रित पृष्ठ थे।

बाद में, बाबरनामा और अकबरनामा को भी लघु चित्रकलाओं से संवार-सजाया गया।

मुगल साम्राज्य के पतन के साथ, यह कला भी अपनी लोक प्रियता खोती गई। फि र भी, राजस्थान तथा पहाड़ी कला की क्षेत्रीय शैलियों ने इस प्रविधि को विकसित किया।

दंड से बच नहीं पाया

जब हेमचंद्र, हेलापुरी का शासक था, तब भगवान की मूर्ति के सामने पूजा में रत अथवा प्रार्थना में मग्न रहनेवाले को चाहे वह महा अपराधी भी क्यों न हो, उसे गिरफ्तार करना मना था। पूजा समाप्त करके बाहर आने के बाद ही सैनिक उसे गिरफ्तार करते थे।

इस शिलालेख की आड़ में अपराधी दंड से बचने के लिए तरह-तरह के उपायों का सहारा लेते थे। जैसे ही उन्हें मालूम हो जाता था कि सैनिक उन्हें गिरफ्तार करने आने ही वाले हैं, वे मंदिर में घुस जाते थे और मूर्ति के सामने हाथ जोड़कर, आंख मूँदकर बैठ जाते थे और पूजा में मग्न हो जाने का नाटक करते थे। तब तक ये पूजाएँ चालू रहती थीं, जब तक सैनिकतंग आकर वहाँ से चले जाते थे।

सैनिक जैसे ही चले जाते थे, वे बाहर आते थे और बचकर कहीं भाग जाते थे। इस स्थिति में उनका पता लगाना सैनिकों के लिए मुश्किल हो जाता था। चंद्रहास, राजा हेमचंद्र के यहाँ नौकरी करने नया-नया आया था। उसने शिलालेख की इस त्रुटि की ओर राजा का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा, "महाराज, मंदिर परम पवित्र स्थल होते हैं। मानव जीवन बिना उतार-चढ़ाव के आगे बढ़े, इसके लिए दैवभक्ति और पाप भीति नितांत आवश्यक हैं और पर्याप्त उपयोगी भी हैं। परंतु, मूर्ति के सम्मुख बैठे अपराधियों को गिरफ्तार न करने का जो शिला-लेख है, उसका दुरुपयोग हो रहा है। अपराधी इसकी आड़ में सैनिकों को धोखा दे रहे हैं और बच निकल रहे हैं। दिन व दिन अपराधों की संख्या बढ़ती जा रही है। आप कृपया इस शिलालेख के विषय में खूब सोचें, न्यायाधीशों से सलाह-मशविरा करें और उचित निर्णय लें तो अच्छा होगा।"

ध्यानपूर्वक सुन चुकने के बाद राजा ने कहा,

सुषमा चतुर्वेदी

"यह शिलालेख हमारे पूर्वजों से अमल में लाया जा रहा है। अकस्मात् इसमें परिवर्तन लाना उचित नहीं होगा।''

चंद्रहास तात्कालिक रूप से चुप तो हो गया, पर उसके बारे में वह सोचता ही रहा।

एक दिन सैनिक उस चोर का पीछा करने लगे, जो सुगंधपुर की एक दुलहिन के आभूषणों की चोरी करके भागा जा रहा था। वह चोर भागता हुआ गाँव की सरहद पर पहुँच गया। सैनिक बेतहाशा उसका पीछा करते रहे। जंगल में भागते हुए उस चोर ने एक झोंपडी में हल्दी और कुंकुम से रंगा हुआ एक पत्थर देखा। चोर बड़े ही आनंद के साथ उस झोंपड़ी में घुसा और उस पत्थर के सामने खड़े होकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा।

उसका पीछा करते हुए आये सैनिक उसे वहाँ देखकर रुक गये और आपस में कहने लगे, "अरे, यह तो देवी की मूर्ति के सामने पहुँच गया। हम तो इसे गिरफ्तार नहीं कर सकते। हमें यहीं रहकर उसका इंतज़ार करना पडेगा।''

चोर ने आँखें बंद कर लीं और मूर्ति के सामने आसन लगाकर बैठ गया। उसे देखते हुए लगता था कि वह पूजा में रत है। सैनिक जानते थे कि यह केवल ढोंग है। थोडी ही देर में सैनिकों ने उसे घेर लिया। चोर ने भांप लिया कि वह गिरफ्तार होने जा रहा है। तो क्रोध का नाटक करते हुए ऊँचे स्वर में कहने लगा, "क्या कर रहे हो, देखते नहीं, मैं पूजा कर रहा हूँ? भगवान के ही समक्ष मुझे गिरफ्तार करोगे?'' वह कुछ और कहने ही वाला था कि अचानक वह मूक रह गया। उसके मुँह से बात ही नहीं निकली, क्योंकि तब तक सैनिकों ने हल्दी और कुंकुम से रंगे उस पत्थर को वहाँ से हटा दिया। चोर गिरफ्तार हो गया।

दूसरे दिन न्यायाधिकारी से राजा ने यह समाचार सुना। नये सलाहकार चंद्रहास की इस कार्रवाई में निहित सत्य को उसने जाना और माना। फौरन उसने पुराने शिलालेख को रद्द कर दिया, जिसके अनुसार पूजा-पाठ में निमग्न अपराधियों को क़ैद करना मना था।

तब से लेकर अपराधी आसानी से बच नहीं पाते थे। क्रमशः अपराध कम होते गये।

समाचार झलक

दन्तकुरेदनी पर मूर्ति निर्माण

शिला और धातु पर मूर्ति बनाना आम बात है। बंगलोर के सी. मल्लिकार्जुन ने पहले क्लास रूम से इकट्ठे किये हुए खड़िया के टुकड़ों पर मूर्ति बनाने की कोशिश की। उसने खड़िया के एक टुकड़े पर मूर्ति बनाकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स को भेजा, जिसे प्रविष्टि नहीं मिली। अपने मित्रों के जोर डालने पर उसने तब दन्तकुरेदनियों पर मूर्ति बनाने का प्रयास किया। हाल में, गिनीज प्रतिनिधियों की उपस्थिति में २४ वर्षीय रेड्डी ने एक उंगली बराबर दन्तकुरेदनी पर २८ कड़ी का 'चेन' बनाया। इससे पहले सन् १९९३ में अमरीका के बॉब शामे ने १७ कड़ी बनाकर रिकॉर्ड बनाया था। मल्लिकार्जुन कर्नाटक के कोलार जिले में स्थित टोपनाहल्ली का निवासी है और बंगलोर में बी.एस. सी. का छात्र है।

'शीतल' सत्य!

सायचीन में लगभग २००० सैनिक भारत की सरहद की रक्षा कर रहे हैं, जहाँ जाड़े में माइनस ५५ से ६० डिग्री सेल्सियस तक तापमान रहता है। ऐसे अत्यन्त ठण्डे मौसम से उनकी रक्षा के लिए प्रत्येक को २ लाख रु. से अधिक मूल्य की पोशाक दी जाती है। यूनिफॉर्म के कुछ मद इस प्रकार हैं- आस्ट्रिया से कोफक बूट्स (७,२०० रु.), स्विटजर लैण्ड से जुराब (१,१०० रु.), इटली से दस्ताने (२,१०० रु.), स्विटरजरलैण्ड से ऊनी जैकेट (१८,००० रु.), स्विटजरलैण्ड से ही पतलून (८,८०० रु.), फिनलैण्ड से कमीज (३,४०० रु.) तथा कनाडा से टोपी (१,००० रु.)।

अन्य देशों (ईरान) की
अनुश्रुत कथाएँ

घोड़ा हिनहिनाये और साम्राज्य मिल जाये!

फारस (वर्तमान ईरान) में तीन हज़ार वर्ष पहले भी एक समृद्ध सभ्यता थी। एक समय वहाँ के समृद्ध राज्य पर स्मरडिस नाम का एक धूर्त राजा राज्य करता था। वास्तव में उसने राज्य को धोखे से हड़प लिया था। उसके शासन में प्रजा सुखी नहीं थी। देश की आम जनता के साथ-साथ कुलीन लोग भी उसे पसन्द नहीं करते थे।

स्मरडिस ने अपनी प्रजा की भलाई के लिए कुछ नहीं किया, पर अपनी सुरक्षा के लिए उसने बहुत अच्छा इन्तजाम किया था। उसके पास उसकी रक्षा के लिए विश्वासपात्र अंगरक्षकों का एक दल था और वह प्रशासन के प्रत्येक विभाग में अपने गुप्तचर रखता था जो उसके विरुद्ध आलोचना करनेवालों की सूचना दिया करते थे। तब वह बड़बड़ करनेवालों की जुबान को क्रूरतापूर्वक बन्द कर दिया करता था।

इसके अधिकतर मंत्री और दरबारी इतने भीरु थे कि राजा के खिलाफ कुछ नहीं कर सकते थे, लेकिन छः ऐसे दरबारी थे जिन्होंने गुप्तरूप से राजा के विरुद्ध एक षड्यन्त्र आयोजित किया। जब उन्हें विश्वास हो गया कि उनकी योजना सफल हो जायेगी तब वे भविष्य के बारे में विचार-विमर्श करने बैठे। सभी छः महत्वाकांक्षी थे और समान रूप से भले थे। उन सब की मैत्री इतनी गहरी थी कि इनाम के लिए आपस में लड़ने का प्रश्न नहीं उठता था।
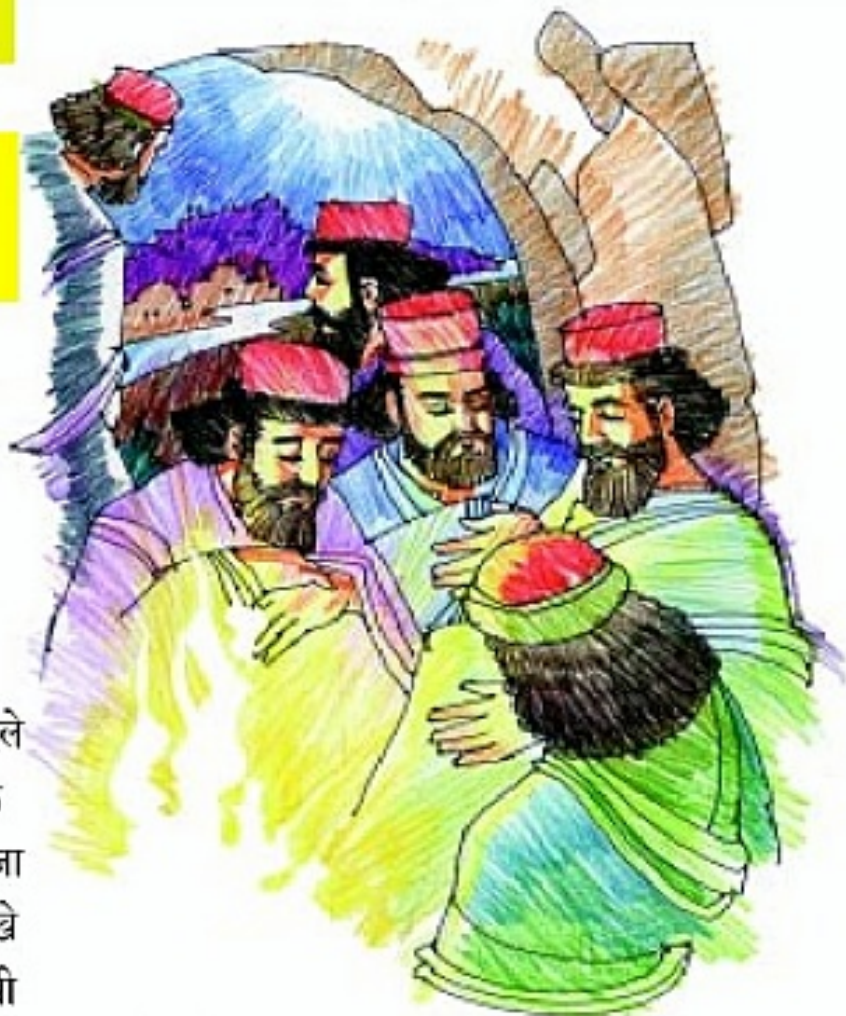
"देखो भाई", उनमें से एक ने कहा, "हम छः के छः सिंहासन पर नहीं बैठ सकते। केवल एक ही राजा बन सकता है। किन्तु शेष पाँच राजा के सलाहकार और मित्र बनकर क्यों नहीं रह सकते? अब, सिंहासन का चुनाव मनमाने ढंग से ही करना होगा तब क्यों नहीं इसे कुछ नये ढंग से करें।"

"यह नया ढंग क्या है?" अन्य मित्रों ने पूछा।

"क्यों नहीं आप सब अपना-अपना कुछ विचार देते?" पहले वक्ता ने सलाह दी।

सभी छः व्यक्ति शान्त होकर चिन्तन करने लगे। तब एक ने सलाह दी। "चुनाव क्योंकि मनमाने ढंग से होगा, इसे इस प्रकार करें: कल प्रातःकाल के शान्त वातावरण में हम सब छः के छः झील के किनारे हरे मैदान में घोड़े पर सवार होकर जायेंगे। जिसका घोड़ा पहले हिनहिनायेगा, वही जीतेगा! क्या यह मंजूर है?" "ठीक है, ऐसा ही होगा," सभी मित्र राजी हो गये।

पौ फटते ही सभी मित्र घोड़ों पर सवार हो हरे मैदान की ओर चल पड़े। झील के पास पहुँचते ही एक कमसीन दरबारी डेरियस का घोड़ा हिनहिनाया। उसके सभी दोस्तों ने उसे तुरन्त बधाई दी। सिर्फ ये ही छः, जानते थे कि भविष्य में कौन राजा होनेवाला है।

शीघ्र ही स्मर्डिस सिंहासन से हटा दिया गया। बिना किसी बाधा के डेरियस राजा बन गया।

किसी को नहीं मालूम था कि उसके घोड़े के पहले हिनहिनाने का रहस्य क्या है। अनजान था। निस्सन्देह कालक्रम में सत्य प्रकाश में आ गया। यह इस प्रकार था: जब सभी छः मित्र विचार विमर्श कर रहे थे तब डेरियस के सेवक ने उनकी बातचीत सुन ली थी। उस दिन शाम को वह डेरियस के घोड़े को झील के निकट ले गया और उसे भर पेट खाने दिया। दूसरे दिन प्रातःकाल जैसे ही घोड़ा उस स्थान पर आया, वह विगत संध्या के भोज की याद में हिनहिना पड़ा।

इसीलिए एक कहावत भी बन गई: घोड़ा साम्राज्य जीत लेता है- अ हॉर्स विन्स अ किंग्डम। लेकिन ऐसा कहना अधिक सच होगा कि सेवक ने स्वामी के लिए साम्राज्य जीता- अ सर्वेन्ट वन अ किंग्डम फॉर हिज मास्टर।

डेरियस, जो फारस की गद्दी पर ५२१ बी.सी. में बैठा, इतिहास में अनेक कार्यों के लिए प्रसिद्ध है। उसने प्राचीन फारस की राजधानी परसेपोलिस नगर की स्थापना की। उसने शिलालेखों के माध्यम से घोषणा की, "भगवान नहीं चाहते कि संसार में अशान्ति रहे। वे चाहते हैं कि उनके बच्चों के लिए शान्ति, समृद्धि और सुशासन बना रहे।"

-एम.डी.
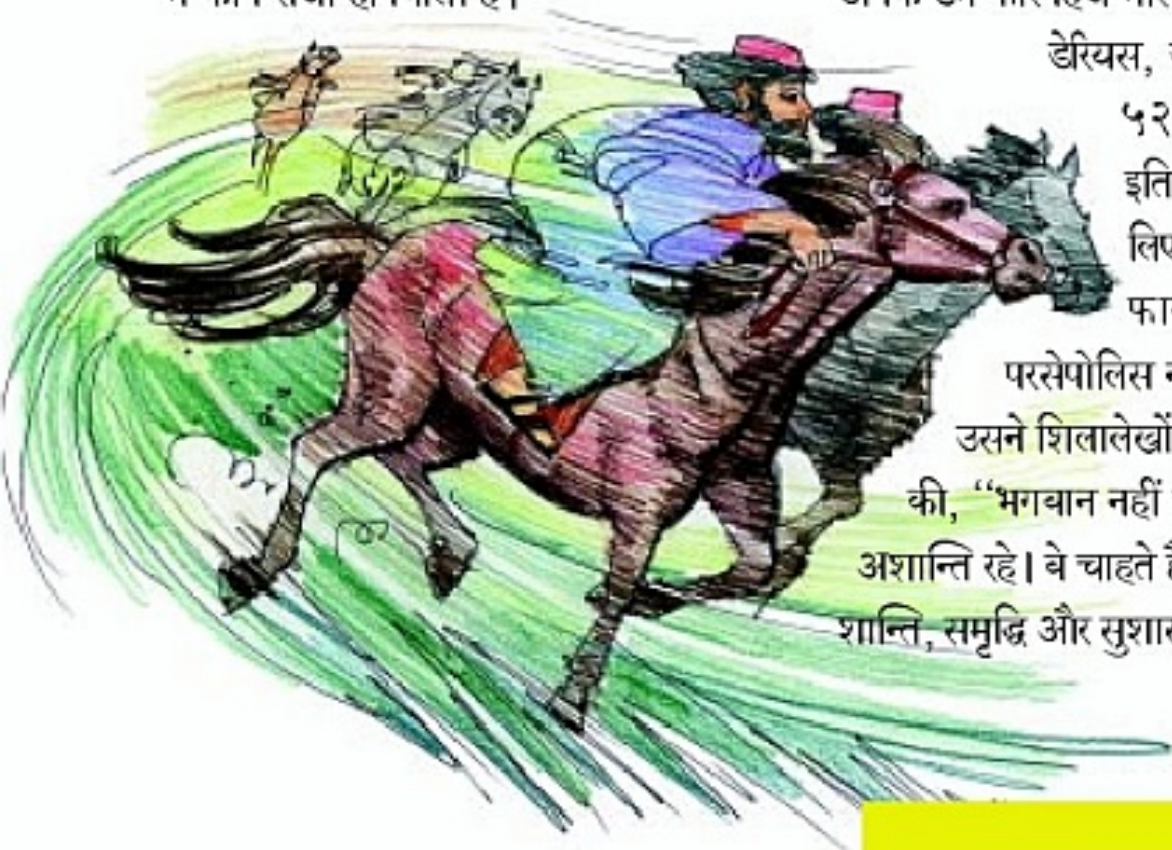
THE ADVENTURES OF G-man

एंड्रोमेनिया

काली परछाइयां भाग 1

प्रस्तुतकर्ता Parle-G

टैरोलीन की शक्तिशाली सेनाओं के ख़तरनाक एन्ड्रॉइड्स से लड़ने के लिए हमारे हीरो ने समांतर दुनिया के जी-मैन से मदद मांगी। एक बार ये दोनों साथ मिल जाएं ...जो जीत ज़्यादा दूर नहीं होगी।

जी-मैन?!!

नहीं
मेरे दोस्त।
मैं हूं ऐंटी-जी,
काली दुनिया का बादशाह।
टैरोलीन का हत्यारा...
पर तुम कौन हो...

मैं तुमसे लड़ना नहीं चाहता !
मैं, तुम हो ! क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना ??
मैं... सूर्यराज हूं... अब बजी दिमाग़ की घंटी ?
सूर्यराज ?
वो कमज़ोर, मूर्ख प्राणी ?
उसे इस दुनिया से निकाल दो। उसने एक हीरो की तरह युद्ध किया।
पर राज करने का अधिकार शूरवीर, ताक़तवर को ही होता है।
और तुम कहते हो मैं तुम हो ? कमाल है।
मैं कुछ बोलूं...

नहीं!!
सूर्यराज मुझे अपने आपसे दूर ही रखो। तुम्हें देख मेरा दिमाग़ ख़राब होने लगता है। फ़ौरन दफ़ा हो जाओ... अभी... इसी वक़्त...

कहां गया वो ?

मुझ पर उसके जी-फ़ोर्स रेड* का हमला हुआ, फिर भी मुझे कुछ नहीं हुआ !!

शायद बुरी ताक़तों के चलते उसकी ये शक्ति कमज़ोर पड़ गई होगी।

और यही बात मेरे लिए फ़ायदेमंद हो सकती है...

वह मुझसे कुछ ज़्यादा ही तकलीफ़ में दिखाई दे रहा है। मुझे उसकी दिमाग़ी हालत को समझना होगा... एक मनोचिकित्सक की तरह...

*जी-फ़ोर्स रेड शक्ति का सबसे उच्च स्तर है। एक सामान्य आदमी इसकी मार से एक हफ़्ते तक उठ नहीं सकता।

अच्छा ही हुआ कि टैरोलीन मर चुका है।

इस तरह ऐंटी-जी मेरे लिए इतना बुरा भी नहीं। पर पता नहीं वो अपने अंदर के सूर्यराज को क्यों मारना चाहता है ?

ये बात तो मैं भी जानता हूं कि अपने अंदर के सुपर हीरो के दोहरे व्यक्तित्व को संभालना इतना आसान नहीं होता।

पर यही बातें तो हमें सुपर हीरो बनाती हैं। वरना ऐसे अजीबो-ग़रीब कपड़े पहनकर गलियों में भटकने का क्या मतलब ? पर ऐंटी-जी के बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता।

इस तरह आने के
लिए माफ़ी चाहता हूं
ऐंटी-जी... पर मेरे पास
कोई चारा भी नहीं था।

अगर ऐंटी-जी मैन कहता है कि उसने टैरोलीन को मार डाला है तो कुर्सी पे बैठा कौन है ? क्या जी-मैन, ऐंटी-जी मैन के चंगुल से बच पाएगा ? जानने के लिए पढ़िए अगला अंक...

मुझमें भरिए रंग, मस्ती के संग.
PARLE
Parle-G
Visit www.parleproducts.com
POWER SUPPLY

PARLE

FIND THE HIDDEN WORDS

A	E	R	T	G	D	G	M	A	N	G	H	J	P
T	E	R	R	O	L	E	N	E	S	D	F	J	A
G	H	H	M	H	F	R	J	U	K	L	G	A	R
R	E	D	I	A	R	D	N	I	M	G	L	D	L
G	H	J	T	B	N	C	O	R	V	X	U	V	E
M	U	F	K	P	A	S	T	Q	P	T	G	U	G
M	A	N	T	C	M	N	L	R	D	G	G	H	J
A	F	J	U	A	O	N	E	U	R	A	A	L	U
C	V	V	J	G	H	K	E	I	K	L	U	Y	J
Q	W	O	G	R	F	Z	T	X	Z	D	C	B	M
B	R	O	E	H	T	S	T	T	H	O	M	A	S
Y	U	H	E	F	G	M	G	U	G	J	U	I	O
R	E	D	B	L	U	E	G	R	E	E	N	H	N
R	N	B	F	B	M	K	L	U	R	F	O	P	H
I	U	Y	G	D	D	T	G	H	W	S	D	R	J

1. Master of Darkness
2. G-Man's Power Supply
3. The Hero
4. G-Man's Companion
5. The machine that stole childrens mind
6. Terrolene's suit is made of this
7. Suryaraj's rank in the army
8. G-man's power beams
9. The Water Monstor
10. The school where the major teaches
11. What the major teaches at school
12. The villian who stole childrens minds

के लिए पावर सप्लाय

Visit: www.parleproducts.com

EVIL TEROLENE

G-man

THE SUPERHERO

Paste the page on cardboard and then cut the page along the lines shown. Your puzzle is now ready. Mix up the pieces and challenge your friends to put it together again

पाठकों के लिए एक कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ो:

राजा का दरबार चल रहा था। अचानक वह दरबारियों से पूछ बैठा, "बताओ, पृथ्वी पर सबसे तेज़ दौड़नेवाला प्राणी कौन है?"

दरबारियों ने उत्तर देने में देर नहीं की। उनमें से एक ने कहा, "बाघ, महाराज!"

दूसरा दरबारी खड़ा हुआ, "निस्सन्देह चिंकारा, मेरे प्रभु!"

उत्तर सिंह और हाथी के दरम्यान भिन्न-भिन्न थे। दरबार में खुशी के अट्टहास से वातावरण गूंज उठा।

अब दरबारी विदूषक की बारी थी। "मेरे प्रभु, मेरा विश्वास है कि दुनिया में सबसे तेज़ दौड़नेवाला प्राणी मैं हूँ।"

कुछ दरबारियों के लिए अपनी हँसी दबाना मुश्किल हो गया। "बकवास!" र ाजा ने टिप्पणी की। "क्या देखते नहीं कि मैंने गंभीरता से ही यह प्रश्न पूछा है?"

"मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ, महाराज!" और दरबारी विदूषक समझाता रहा।

- क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि विदूषक का स्पष्टीकरण क्या था?
- क्या राजा सहमत हो गया? क्या उसने पुरस्कृत किया?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में दो और कहानी का एक उपयुक्त शीर्षक बताओ। अपनी प्रविष्टि के साथ निम्नलिखित कूपन को भर कर एक लिफाफे में भेज दो जिस पर "प ढ़ो और प्रतिक्रिया दो" लिखा हो।

अन्तिम तिथि: ३१ अगस्त २००५

नाम --**उम्र**------------**जन्मतिथि**----------------------

विद्यालय ---**कक्षा**------------

घर का पता ---

---**पिनकोड**----------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर **प्रतियोगी के हस्ताक्षर**

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

महाराष्ट्र की एक लोक कथा

राजकुमार और पत्थर के खम्भे

बहुत समय पहले रत्नगिरि का राजा अच्छी तरह शासन कर रहा था और उसके राज्य में प्रजा शान्तिपूर्वक जीवन-यापन कर रही थी। उसके तीन पुत्र थे और वे तीनों सुन्दर युवक के रूप में बड़े हो रहे थे। यह सोचकर कि इन्हीं में से कोई उसके सिंहासन क ा उत्तराधिकारी होगा, उन्हें राजा ने अपने पास बुला कर कहा, "मैं चाहता हूँ कि अब तुम सब राज्य में घूम कर यह देखो कि प्रजा कैसे रहती है, वे सुखी हैं कि नहीं। तुम सब भिन्न-भिन्न दिशाओं में जाओ और संध्या तक लौटकर यह बताओ कि तुमने क्या देखा।"

अतः दूसरे दिन प्रातःकाल तीनों राजकुमार दिन का भोजन अपने साथ लेकर पैदल निकल पड़े। सबसे बड़े राजकुमार राजकीर्ति ने बायीं ओर का मार्ग लिया; राजमूर्ति ने दायीं ओर का रास्ता लेने का निश्चय किया; सबसे कनिष्ठ राजकुमार राजस्नेही ने सीधे जानेवाले पथ का अनुगमन किया। सबने संध्याकाल तक महल में वापस लौट आने का वचन दिया।

राजकीर्ति बहुत देर तक चलने के बाद एक जंगल में पहुँचा जहाँ उसने एक सरोवर के निकट तीन ख़ूबसूरत घोड़ों को घास चरते देखा। निकट ही एक वृक्ष के नीचे बैठा एक योगी घोड़ों की निगरानी कर रहा था। राजकुमार ने योगी के पास जाकर साष्टांग दण्डवत किया। योगी ने पूछा, "वत्स, तुम कौन हो और जंगल में तुम्हारा कैसे आना हुआ?"

राजकीर्ति ने अपना परिचय और आने का उद्देश्य बताते हुए कहा, ''हे महात्मन ! क्या मैं आप के एक घोड़े पर सवारी कर सकता हूँ जिससे मैं अधिक से अधिक क्षेत्रों तक पहुँच कर वहाँ की प्रजा से मिल सकूँ?''

''किसी घोड़े को ले लो लेकिन सूर्यास्त तक निश्चित रूप से लौट आना और अपनी यात्रा के बारे में बताना'', योगी ने कहा।

राजकीर्ति एक घोड़े पर सवार होकर तेज़ी से निकल पड़ा। कुछ दूरी पर वहाँ सब्जियों का एक विचित्र बाग देख कर रुक गया।

उस बाग का कोई माली नहीं था उसके बाड़े में कोई द्वार बना हुआ नहीं था। वह अपनी आँखों पर विश्वास न कर सका जब उसने देखा कि बाड़े के खूंटे हँसियों में बदल गये और सब्जियों को काटने लगे। राजकुमार चाहता तो अब बाग के अन्दर जा सकता था, लेकिन उसे साहस न हुआ।

वह जंगल में लौटकर घोड़े से नीचे उतर योगी के पास आया। ''हाँ पुत्र, तुम उत्तेजित लग रहे हो। क्या बात है?'' राजकीर्ति ने रहस्यमय बाग के बारे में बताया। ''राजकुमार'', योगी ने आँखें मिचकाते हुए पूछा, ''तुमने उस विचित्र दृश्य से क्या सीखा?''

''मैं कुछ नहीं समझ सका, महात्मन! यह सब रहस्यमय था और इस विचित्र घटना की व्याख्या करना मेरे बस की बात नहीं है।'' राजकुमार ने स्वीकार किया।

''यदि तुम इतनी आसान चीजें नहीं समझ सकते तो शासन कैसे करोगे? मैं तुम्हारी मूर्खता के कारण तुम्हें पत्थर का खम्भा बना रहा हूँ।''

जब राजकीर्ति रात तक भी नहीं लौटा तब राजा और दोनों राजकुमार बहुत चिन्तित हो गये। राजा दोनों राजकुमारों से भी उनके अनुभव के बारे में पूछना भूल गया। उन्होंने देखा कि दोनों राजकुमार दिन भर राज्य में घूमते रहने के कारण थक गये हैं। उन्होंने कहा किदूसरे दिन प्रातःकाल सोचेंगे कि क्या करना है। यह निश्चय किया गया कि राजमूर्ति भाई की खोज में बायीं ओर की सड़क से जायेगा। और राजस्नेही दायीं ओर की सड़क से, क्योंकि जिस मार्ग से पहले दिन वह

गया था वह पहाड़ों की ओर जाता था जिधर आबादी बहुत कम थी।

राजमूर्ति, शीघ्र ही जंगल में आ गया, जहाँ तीन ख़ूबसूरत घोड़े घास चर रहे थे और एक योगी उनकी निगरानी कर रहा था। उसने योगी को प्रणाम किया और एक घोड़े पर सवारी करने की आज्ञा मांगी। ''हे महात्मन, मैंने ऐसे सुन्दर घोड़े पहले कभी नहीं देखे।''

''ले जाओ, ओ राजकुमार! लेकिन सूर्यास्त तक लौट आना और अपनी साहसिक यात्रा के अनुभव बताना।'' योगी ने मुस्कुराते हुए कहा।

राजमूर्ति घोड़े पर सवारी के उत्साह में पत्थर का वह खम्भा देख न सका जिसका ऊपरी हिस्सा उसके भाई के चेहरे से मिलता-जुलता था। कहीं उसका भाई खड़ा, बैठा हुआ या लेटा हुआ मिल जाये, इस ख्याल से घोड़े पर सवार हो जाते हुए उसने अपनी बायीं और दायीं ओर देखा। लेकिन उसे कोई ऐसा नहीं मिला ।

उसे एक बूढ़ा आदमी मिला जो लकड़ी के गट्ठर से दब कर झुका हुआ था। राजमूर्ति ने घोड़े की लगाम खींचते हुए पूछाः ''दादा जी, क्या मैं सहायता करूँ?''

उस आदमी ने अपना सिर भी नहीं उठाया। और न एक शब्द ही कहा। पर फिर भी और लकड़ियाँ चुनता रहा। राजमूर्ति को यह घटना अनोखी-सी लगी, इसलिए उसने योगी को बताना चाहा।

वह वापस लौटकर घोड़े से नीचे उतरा और अभिवादन के लिए झुका। ''बताओ, तुम्हारा अनुभव क्या था?'' योगी ने पूछा।

राजमूर्ति ने वृद्ध के विषय में बताया और यह भी कहा कि वह उसकी सहायता करना चाहता था, लेकिन वृद्ध ने इसकी सहायता नहीं ली।

''उसने तुम्हारी सहायता क्यों नहीं स्वीकार की?'' योगी ने पूछा। ''मैं नहीं कह सकता, महात्मन; उसने तो एक शब्द भी नहीं कहा।'' राजमूर्ति ने कहा।

''राजकुमार! यदि तुम इतनी सरल बातें भी नहीं समझ सकते तो मौका मिलने पर राज्य पर शासन कैसे करोगे? तुम मूर्ख हो, इसलिए मैं तुम्हें पत्थर का खम्भा बना देता हूँ।''

जब राजमूर्ति भी नहीं लौटा, राजस्नेही के

साथ राजा भी परेशान हो गया। राजस्नेही ने राजा को आश्वस्त करते हुए कहा कि कल सवेरे ही भाइयों की खोज में निकल पड़ूँगा।

दूसरे दिन सुबह ही वह बायें मार्ग पर चल पड़ा और शीघ्र ही उस जंगल में पहुँच गया। उसे भी चरते हुए सुन्दर घोड़ों ने आकृष्ट किया जिन्हें एक शान्तिपूर्वक बैठा हुआ योगी देख रहा था। अचानक राजकुमार ने पत्थर के दो खम्भों को देखा। ये उसे बहुत विचित्र लगे। खम्भों के ऊपरी हिस्से उसके भाइयों के चेहरों से मेल खाते थे। उसके मन में जिज्ञासा हुई।

राजस्नेही ने योगी से पूछा, ''हे पावन आत्मा! क्या आपने मेरे भाइयों को देखा है?''

''हाँ, वे इधर आये थे।'' योगी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''वे घोड़ों पर सवार होना चाहते थे। जब वे वापस आये मेरे प्रश्नों के उत्तर न दे सके इसलिए मैंने उन्हें पत्थर के खम्भों में बदल दिया।''

''क्या उन्हें पुनः जीवित नहीं किया जा सकता, महात्मन?'' राजस्नेही ने विनती की।

''एक घोड़ा ले जाओ और मार्ग में कुछ अनोखी चीज़ दिखाई दे तो मुझे उसका रहस्य समझाओ।''

योगी ने कहा। ''यदि तुम्हारा उत्तर सन्तोषजनक हुआ तो तुम तीनों राजकुमार तीन घोड़ों पर सवार होकर वापस जा सकते हो।''

राजकुमार राजस्नेही ने थोड़ी देर के लिए सोच और अपने भाग्य की परीक्षा लेने का निश्चय किया, जिससे उसके भाइयों के प्राण भी बचाये जा सकते थे। वह योगी के आदेशानुसार एक घोड़े पर सवार होकर चल पड़ा। उसने कोई अनोखी घटना नहीं देखी और न किसी विचित्र व्यक्ति से उसकी मुलाकात हुई जिससे योगी के उत्तर देने के लिए उसे कोई संकेत मिल सके।

उसे प्यास लग रही थी और वह घोड़े को विश्राम भी देना चाहता था। उसने कुछ दूरी पर एक सरोवर देखा।

वह घोड़े को घास चरने के लिए छोड़ दिया और पानी पीने के लिए सरोवर की ओर बढ़ा। जैसे ही उसने अपनी अंजलि में पानी लेने के लिए हाथ बढ़ाया कि आश्चर्य! सरोवर पीछे हट गया। वह आगे बढ़ा, लेकिन जल पीछे हटता गया।

और, घोर आश्चर्य! राजकुमार थोड़ी ही देर में सूखे सरोबर के तल पर खड़ा था।

यह सचमुच एक आश्चर्यजनक घटना थी। वह तुरन्त योगी के पास वापस चला गया और अपने अनुभव के बारे में बोला। ''हाँ, ठीक है, लेकिन इस घटना से तुमने क्या समझा?'' योगी ने प्रश्न किया।

राजकुमार ने बहुत माथापच्ची की लेकिन उसे कोई युक्तियुक्त उत्तर न सूझा जो साधु को सन्तुष्ट कर सके। ''तुम भी अपने भाइयों के समान मूर्ख हो और तुम्हारी भी वही दुर्गति होगी।'' योगी ने कहा। दूसरे ही क्षण राजकुमार राजस्नेही पत्थर के खम्भे में बदल गया। कोई भी कल्पना कर सकता है कि सबसे छोटे राजकुमार के देर रात तक भी नहीं लौटने पर महल में कितनी खलबली मची होगी।

राजा के पश्चाताप का कोई अन्त नहीं था, क्योंकि उसी के आदेश पर राजकुमार बाहर गये थे।

मंत्री ने सुझाब दिया कि राजकुमारों की खोज करने के लिए सेना को चारों ओर भेज देना चाहिये। किन्तु राजा ने घोषणा की कि राजकुमारों की खोज करने वह स्वयं जायेगा। राजा ने उसी मार्ग का अनुगमन किया और शीघ्र ही उसी जंगल में आ गया जहाँ योगी शान्तिपूर्वक घोड़ों को चरते हुए निगरानी कर रहा था।

राजा ने सोचा कि योगी अपने तपोबल से राजकुमारों के बारे में कुछ कह सकेगा। ''हे धर्मात्मा, मेरा विश्वास है कि मेरे तीनों बेटे राज्य का भ्रमण करने के लिए इस मार्ग से आये हैं...''

योगी बीच में ही हस्तक्षेप करते हुए बोला, ''हाँ, वे आये थे। मैंने उनसे आसान सवाल पूछे जिनका उत्तर वे नहीं दे सके। मेरी नज़र में वे मूर्ख थे और राजा होने लायक नहीं थे। इसलिए मैंने उन्हें पत्थर के खम्भों में बदल दिया। तुम उन्हें यहाँ देख सकते हो।''

राजा खम्भों के ऊपरी हिस्सों को अपने बेटों के चेहरों से मिलते देख चकित रह गया।

''वे प्रश्न क्या थे, महात्मा? क्या मैं अपने बेटों के लिए उत्तर दे सकता हूँ।'' राजा ने कहा।

योगी ने तब सबसे बड़े राजकुमार के अनुभव के बारे में बताया। ''राजकुमार ने सब्जियों का एक बाग देखा जिसका कोई रक्षक नहीं था। अचानक बाड़े के खूंटे हँसियों में बदल कर सब्जियों को काटने लगे। इसका अर्थ क्या है?''

''बाड़ा पौधों और सब्जियों की रक्षा के लिए था। लेकिन एक दुष्ट रखवाले की तरह अपने मालिक की दौलत को उसने बर्बाद कर दिया।''

योगी ने मुस्कुराते हुए दूसरे राजकुमार के अनुभव का विवरण दिया। ''भारी बोझ से दबा हुआ होते हुए भी उसकी परवाह किये बिना और लकड़ियाँ चुन कर वृद्ध अपना भार बढ़ाये जा रहा था। हे राजन, इसका अर्थ क्या है?''

राजा ने कहा, ''वृद्ध को अपने पास की सम्पति से सन्तोष नहीं था। परिणाम पर विचार किये बिना वह और अधिक प्राप्त करने के लोभ से ग्रस्त था।''

योगी अब भी मुस्कुरा रहा था। ''तुम्हारा सबसे छोटा राजकुमार प्यास बुझाने के लिए सरोवर से पानी पीना चाहता था, लेकिन सरोवर ने उसे धोखा दिया। हे राजा, इस रहस्य का क्या अर्थ है?''

''एक फ़िज़ूलखर्च के पास जो बेकार की चीजों पर अपनी दौलत बर्बाद करता है, अन्त में कुछ नहीं बचता।'' राजा ने कहा। उसे एक अट्टहास सुनाई पड़ा और उसने अपने तीनों बेटों को अपने पास देखा। खम्भे अदृश्य हो गये थे।

''हे महात्मन!'' राजा ने साष्टांग दण्डवत के साथ कहा। ''मेरे तीनों बेटों को पुनर्जीवन देने के बदले मैं आजीवन आप की सेवा करूँगा। आज मैं इन्हें अपने महल में ले जाऊँगा और यदि आप मेरे बच्चों को यह शिक्षा देने के लिए कि वे अच्छे राजा कैसे बनें, आप इनके गुरु बनकर हमारे साथ चलें तो मैं आप का आभारी रहूँगा।''

योगी ने राजा का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और राजकुमारों को कहा, ''तुम सब एक-एक घोड़ा लेकर अपने पिता के साथ लौट जाओ।''

कुछ दिनों के पश्चात योगी को समारोहपूर्वक महल में ले जाकर राजकुमारों के राजगुरु के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।
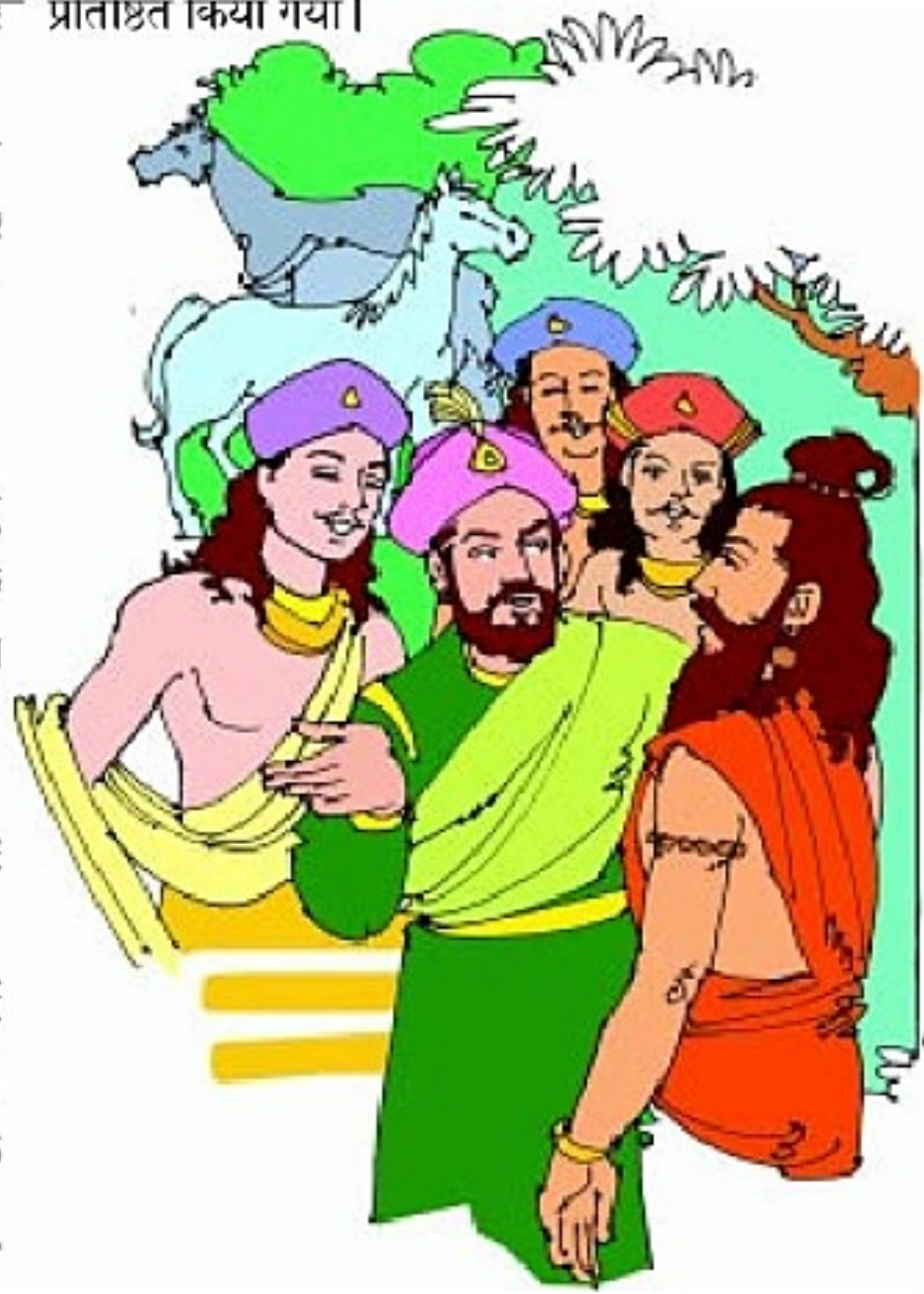
दासी पुत्र

ब्रह्मदत्त काशी राज्य पर जब शासन कर रहे थे, उन दिनों बोधिसत्व एक धनवान के रूप में पैदा हुए। जवान होने पर शादी कर ली। थोड़े समय बाद बोधिसत्व के एक पुत्र हुआ। उसी दिन उस घर की दासी के गर्भ से भी एक पुत्र पैदा हुआ। उसका नाम कटाहक रखा गया।

धनवान का पुत्र और कटाहक भी धीरे-धीरे बढ़ने लगे। धनवान का पुत्र जब पढ़ने जाता, तब कटाहक उसका तख़्ता व किताबें लेकर साथ चलता था। इसलिए धनवान के पुत्र ने जो सीखा, वह दासी पुत्र ने भी सीख लिया।

धीरे - धीरे कटाहक शिक्षित और अक़्लमंद हो गया। अब एक नौकर के स्तर पर रहना कटाहक को अच्छा न लगा। उसके मन में यह इच्छा पैदा हुई कि उसकी शिक्षा और अक़्लमंदी के अनुकूल उचित स्थान प्राप्त कर लेना चाहिए। इस वास्ते उसने एक उपाय सोचा।

काशी से कई कोस की दूरी पर प्रत्यंत देश में बोधिसत्व का एक लखपति मित्र रहा करता था। उसके नाम कटाहक ने ख़ुद अपने मालिक की ओर से एक जाली पत्र लिखाः

"मैं अपने पुत्र को आप के पास भेज रहा हूँ। हमारे बीच रिश्ता जोड़ लेना उचित होगा। इसलिए आप अपनी पुत्री का विवाह मेरे पुत्र के साथ करके अपने ही घर इसे रखिये। मैं फ़ुरसत पाकर ज़रूर आप से मिलने की कोशिश करूँगा!"

यह चिट्ठी लिखकर कटाहक ने अपने मालिक की मुहर उस पर लगा दी, उनके खज़ाने से आवश्यक धन लेकर प्रत्यंत देश चला गया और लखपति के हाथ यह चिट्ठी दी।

लखपति वह चिट्ठी पाक र खुशी के मारे उछल पड़ा। उसने एक शुभ मुहूर्त में कटाहक के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया।

फिर क्या था, कटाहक की सेवा में अब अनेक

नौकर-चाकर हाज़िर रहने लगे। उसे स्वादिष्ट भोजन मिलने लगा। वह सुख-भोगों में डूब गया, फिर भी वह प्रतिदिन नाहक़ खीझकर कह उठता था- ''छीः छीः, इस प्रत्यंत देश की जनता सभ्यता तक नहीं जानती। यह भी क्या कोई भोजन है? और देखो, ये वस्त्र कैसे हैं? मैंने ऐसी असभ्यता और उजड्डपन कहीं नहीं देखी है।''

इस बीच बोधिसत्व के मन में संदेह हुआ कि आख़िर कटाहक का क्या हुआ? इसलिए उसकी खोज करने के लिए बोधिसत्व ने चारों तरफ़ अपने सेवकों को भेजा। उनमें से एक ने प्रत्यंत देश जाकर इस बात का पता लगाया कि कटाहक ने एक लखपति की बेटी के साथ शादी करके अपना नाम तक बदल डाला हैऔर वह अपने को काशी के अमुक धनवान का पुत्र बतला रहा है।

यह ख़बर मिलते ही बोधिसत्व को बड़ा दुख हुआ। वे ख़ुद जाकर कटाहक को ले आने के ख़्याल से प्रत्यंत देश के लिए रवाना हुए। उनके आगमन का समाचार सुनकर कटाहक घबरा गया। पहले उसने भाग जाना चाहा, फिर उसने सोचा कि ऐसा करने पर उसका ही नुक़सान होगा। आख़िर उसने सोचा कि अपने मालिक को सच्चा हाल बतलाना ही उचित होगा। अपने मालिक के द्वारा स्वयं सारा हाल जानने के पहले सच्ची हालत उन्हें बताकर उन्हे शांत करना और उनसे अपनी करनी के लिए क्षमा माँग लेना अच्छा होगा।

पर अपने मालिक के पास नौकर जैसा व्यवहार करते देख लोग उस पर शंका कर सकते हैं। यों विचार करके एक दिन कटाहक ने अपने नौकरों से कहा, ''मैं सब पुत्रों जैसा नहीं हूँ। मैं अपने पिता के प्रति पूज्य भाव रखता हूँ। जब मेरे पिता भोजन करने बैठते हैं, तब मैं उनके पास खड़े होकर पंखा झलता हूँ। पानी बग़ैरह सारी चीज़ें मैं उन्हें ख़ुद पहुँचा देता हूँ।''
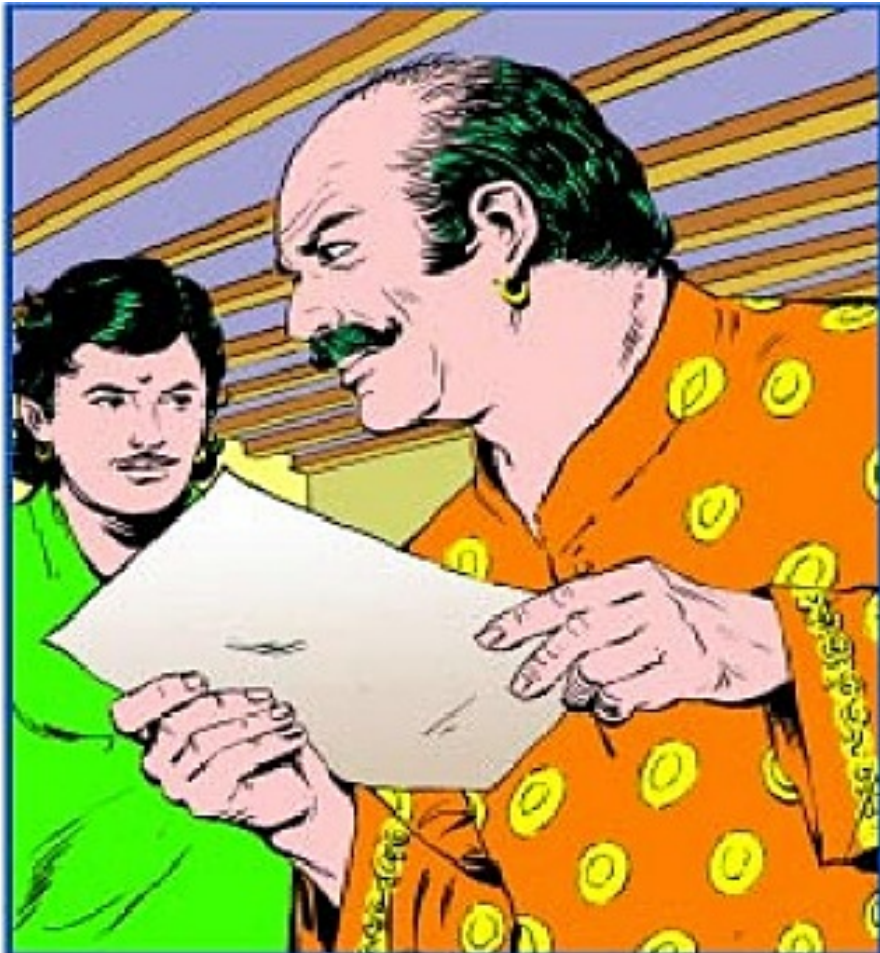
इसके बाद कटाहक अपने ससुर के पास जाकर बोला, "मेरे पिताजी आ रहे हैं, मैं अगवानी करके उन्हें ले आऊँगा।'' लखपति ने मान लिया।

कटाहक अपने मालिक से नगर के बाहर ही मिला, उनके पैरों पर गिरकर अपनी करनी का परिचय दिया, उनसे क्षमा माँगकर प्रार्थना की कि उसे ख़तरे से बचा लें। बोधिसत्व ने उसे अभयदान दिया।

लखपति बोधिसत्व को देख प्रसन्न हुआ और

बोला, ''आपकी इच्छा के अनुसार अपनी बेटी का विवाह मैंने आपके पुत्र के साथ कर दिया है।''

बोधिसत्व ने प्रसन्नता दिखाने का अभिनय किया और कटाहक से भी पिता के समान वार्तालाप किया। इसके बाद उन्हों ने लखपति की बेटी को बुलाकर पूछा, ''बेटी, मेरा पुत्र तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार कर रहा है न?''

''वैसे उनके अन्दर कोई कमी नहीं है, पर खाने की चीज़ों में उनको एक भी पसंद नहीं आती। कितने भी प्रकार के व्यंजन अच्छी तरह से बनवा दूँ, फिर भी उनमें कोई न कोई दोष ढूँढ लेते हैं! मेरी समझ में नहीं आता कि किस तरह से उनको खुश किया जा सकता है।'' कटाहक की पत्नी ने बताया।

''हाँ, वह खाने के समय इसके पहले हमारे घर पर भी इसी तरह सब को तंग किया करता था। इसलिए इस बार जब वह खाने की शिकायत करने लग जाएगा, तब तुम यह श्लोक पढ़ो। मैं एक श्लोक तुम्हें लिखकर देता हूँ। उसे तुम कंठस्थ कर लो। फिर वह कभी खाते वक़्त शिकायत न करेगा।'' इन शब्दों के साथ बोधिसत्व ने उसे एक श्लोक लिखकर दिया।

इसके बाद बोधिसत्व थोड़े दिन वहाँ बिताकर काशी लौट गये। उनके जाने के बाद कटाहक की हिम्मत और बढ़ गई। वह पहले से कहीं ज़्यादा शिकायत करने लगा।

एक दिन कटाहक के मुँह से शिकायत सुनकर उसकी पत्नी ने यह श्लोक पढ़कर सुनायाः

''बहूँपि सो विकत्थेच्य अं इं जनपदगतो,
अन्वागं त्वान धूसेच्य भुंज भोगे कटाहक।''

(कटाहक अनेक प्रकार से गालियाँ सुनकर दूसरी जगह जाकर अन्यों की निंदा करते समस्त प्रकार के सुख भोगता है।)

कटाहक की पत्नी इस श्लोक का भाव नहीं जानती थी। पर कटाहक ने समझ लिया कि उसके मालिक ने उसके नाम के साथ सारा रहस्य उसकी पत्नी को बता दिया है।

इसके बाद कटाहक ने फिर कभी खाना खाते वक़्त शिकायत नहीं की, बल्कि संतुष्ट होकर खाते हुए सुखपूर्वक दिन बिताने लगा।

विष्णु पुराण

मुनियों ने सूत महर्षि से पूछा, "मुनींद्र! हमने सुना है कि विष्णु अपने एक अन्य रूप कृष्ण की आकृति में गोलोक में वास करते हैं। हम उस कृष्ण के बारे में पूरा वृत्तान्त सुनना चाहते हैं।"

इस पर सूत मुनि ने यों कहना प्रारम्भ किया-

सत्य लोक के ऊपर गोलोक है। वह सदा-सर्वदा अनेक नक्षत्रों के समूह के साथ ज्योत्सना से भरा रहता है। विष्णु अत्यन्त गहरे नीले रंग के कृष्ण के नाम से वहाँ पर प्रवाहित होने वाली दिव्य नदी विरजा के तट पर तुलसी वन में मुरली बजाते दिव्य संगीत की रचना करते रहते हैं। उस मुरली के भीतर से ध्वनित होनेवाले नाद ने राधा की आकृति धारण की।

राधा प्रकृति तथा कृष्ण पुरुष के रूप में एक दूसरे से कभी अलग न होने वाली जोड़ी के रूप में गोलोक में विहार किया करते हैं। सुदाम सदा-सर्वदा उनकी सेवा किया करता है।

राधा देवी के शरीर से असंख्य गोपिकाओं का उद्भव हुआ। विरजा नदी नारी रूप धारण कर बृन्दा देवी के रूप में प्रेम पूर्वक कृष्ण की आराधना किया करती है।

एक बार राधा और कृष्ण परस्पर अनुराग में आबद्ध हो एकान्त में थे। उस वक्त कृष्ण की खोज में विरजा पहुँची। राधा ने उसको शाप दिया कि वह पृथ्वी पर जन्म ले। इस पर सुदाम ने आपत्ति उठा कर राधा से कहा कि इस प्रकार विरजा को शाप देना अनुचित है।

इस पर राधा ने कुपित होकर सुदाम को भी शाप दे डाला, "तुम भी राक्षस होकर पृथ्वी पर जन्म धारण करो।" राधा के शाप के फल स्वरूप

बिरजा एक राजकुमारी तुलसी तथा वृन्दा के नामों से पैदा हुई। और सुदाम शिवजी के तीसरे नेत्र की क्रोधाग्नि से जलन्धर बन कर राक्षसराज पैदा हुआ। सुदाम और कृष्ण दोनों एक ही थे। कृष्ण का अपने सहचर सुदाम के प्रति अपार अनुग्रह था। इस कारण उन्होंने उसे अजेय कृष्ण कवच प्रदान किया।

तुलसी विष्णु को अपना पति मान कर उनकी आराधना करते हुए तपस्या में लीन थी। उस स्थिति में एक दिन जलन्धर ने उसे देखा।

इसके बाद जलन्धर ने तुलसी के पिता धर्मध्वज से मिलकर अपनी इच्छा प्रकट की कि वे तुलसी का विवाह उसके साथ कर दें।

आखिर जलन्धर के साथ तुलसी का विवाह हुआ। वैसे जलन्धर ने तुलसी के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उसके साथ विवाह तो कर लियापर उसके राक्षसत्व को तुलसी का सात्विक तत्व विवाह के समय ही अच्छा न लगा। विवाह वेदिका से उठने के पश्चात जलन्धर ने फिर कभी तुलसी की ओर आँख उठा कर तक न देखा।

पर तुलसी सदा अपने पति का ही स्मरण करती हुई उसके चरण-चिह्नों की आराधना करती रही। जलन्धर राक्षसों का सम्राटबना और उसने अपने कृष्ण-कवच के प्रभाव से ही तीनों लोकों पर विजय प्राप्त की।

एक बार कलह प्रिय नारद मुनि ने जलन्धर के सामने पार्वती के अद्भुत सौन्दर्य का वर्णन किया। इस पर जलन्धर ने कैलास पर हमला कर दिया और शिवजी को युद्ध के लिए ललकारा, "तुम चुपचाप पार्वती को मुझे सौंप दो, वरना मेरे साथ युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।" इस पर शिवजी ने कुपित होकर जलन्धर पर अपने त्रिशूल का प्रहार किया पर उनका त्रिशूल जलन्धर के वक्ष से लग कर नीचे गिर पड़ा।

पार्वती भयभीत हो राधा देवी की शरण में चली गई। इस पर राधा देवी ने पार्वती को समझाया, "जलन्धर शिवजी की नेत्राग्नि से ही पैदा हुआ है। इसलिए शिवजी के द्वारा ही उसका संहार संभव है। लेकिन कृष्ण कवच की वजह से कोई भी अस्त्र-शस्त्र उसकी हानि नहीं कर सकता। तुलसी देवी के पातिव्रत्य से उसके प्राणों के लिए कोई खतरा नहीं है। फिर भी विष्णु की माया से परे कोई वस्तु नहीं है। तुम विष्णु की प्रार्थना करो। वे ही तुम्हारी सहायता कर सकते हैं।"

पार्वती की प्रार्थना सुनकर विष्णु ने वृद्ध ब्राह्मण के रूप में पहुँच अनेक प्रकार से जलन्धर की प्रशंसा की, और दान में कृष्णकवच माँग लिया।

इसके बाद विष्णु जलन्धर के रूप में तुलसी देवी के महल में गये। उधर कैलास में शिवजी तथा जलन्धर के बीच भीषण संग्राम चल रहा था।

किसी ज़माने में गण्डकी नामक एक देव-वेश्या ने पृथ्वी लोक में पहुँच कर विष्णु की घोर तपस्या की और वर माँगा, ''भगवान, आपको अपने अन्दर इस प्रकार छिपा रखने की मेरी प्रबल कामना है जैसे लोग रत्नादि निधियों को गुप्त रूप से सुरक्षित रख लेते हैं।''

विष्णु ने समझाया, ''तुम पृथ्वी पर गण्डकी नदी के रूप में प्रवाहित हो जाओ। मैं तुम्हारे भीतर शालिग्राम बनकर आ जाऊँगा।'' इस पर गण्डकी ने नदी का रूप धारण किया।

उधर तुलसी देवी ने माया के प्रभाव में आकर विष्णु को अपना पति समझ लिया। उसी समय शिवजी ने जलन्धर के कण्ठ को अपने त्रिशूल से भेद डाला। उसका सिर उछल कर तुलसी देवी के हाथों का स्पर्श करते हुए नीचे आ गिरा। तभी विष्णु ने पुनः अपने असली रूप को धारण कर लिया। तुलसी चौंक पड़ी। अपने भ्रम से मुक्त होकर तुलसी ने विष्णु को शाप दिया, ''हे विष्णु, आपने मुझ को धोखा दिया है। इस अपराध के फलस्वरूप आप शिला के रूप में बदल जाइये।''
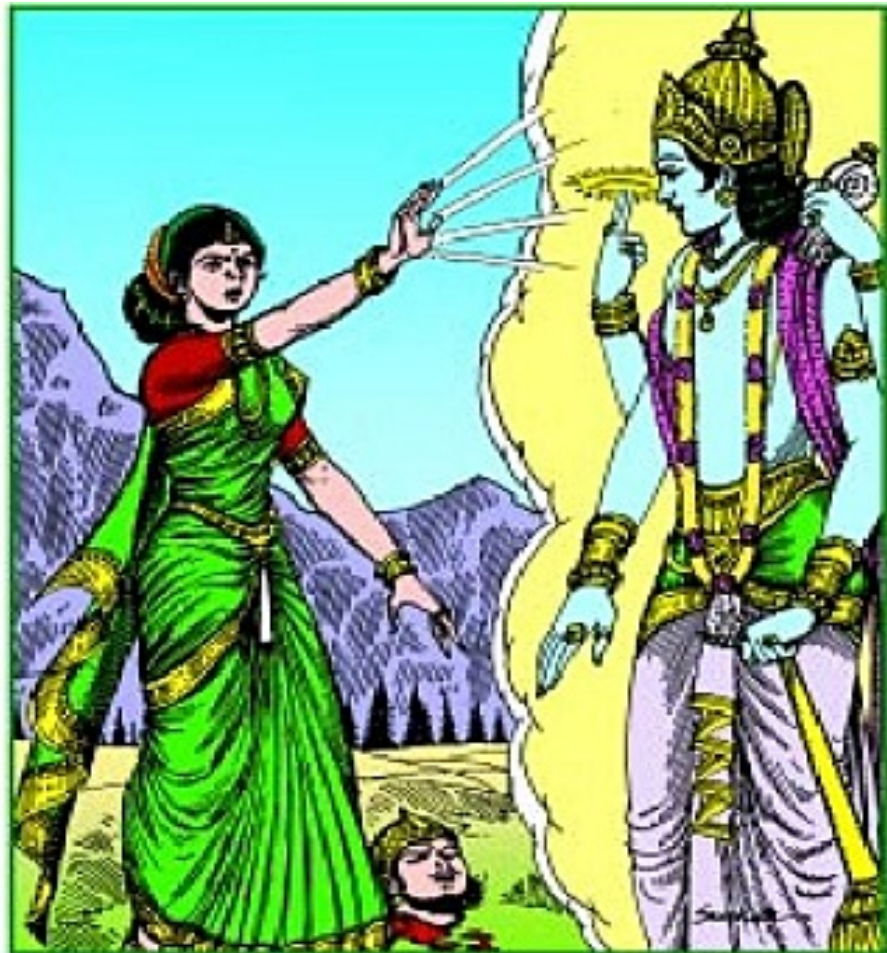
विष्णु मंद हास करके बोले, ''हे तुलसी सती, मैं तुम्हारे शाप को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता हूँ। तुम्हारा पति जलन्धर और कोई नहीं, बल्कि सुदाम हैं। मैं कृष्ण-सुदाम के रूप में पृथ्वी लोक में रहूँगा। तुमने अपने विवाह के पूर्व मुझ को पति के रूप में पाने के लिए मेरी प्रार्थना की थी। विवाह के पश्चात अपने पातिव्रत्य धर्म का अनुसरण करके सती जगत के लिए आदर्श बन गई। तुम पवित्रता के चिह्न के रूप में तुलसी का पौधा बन कर पृथ्वी पर अवतार लोगी। तुलसी मेरे लिए प्रीति पात्र बनकर रहेगी। मैं तुलसी के नीचे मैं सदा शालिग्राम के रूप में रहूँगा।

इसके बाद विष्णु गण्डकी नदी में शालिग्राम शिलाओं के रूप में अवतरित हुए। तुलसी पृथ्वी पर पौधे के रूप में अवतरित हुई।

एक बार महर्षियों के सामने यह विवाद उत्पन्न

हुआ कि त्रिमूर्तियों में कौन महान है। इस पर इस का निर्णय करके पता लगाने के लिए उन सबने भृगु महर्षि को भेजा। भृगु सबसे पहले सत्य लोक में पहुँचे। वहाँ पर ब्रह्मा सरस्वती देवी के वीणा-वादन में निमग्न थे। इसलिए उन्होंने भृगु के वहाँ पर पहुँचने पर भी ध्यान न दिया। इसके बाद भृगु महर्षि कैलास पहुँचे। वहाँ पर शिवजी पार्वती के साथ नृत्य कर रहे थे। इसलिए वे उस हालत में भृगु को देख खीझ उठे।

दो स्थानों पर अपमानित होकर भृगु महर्षि क्रोध में आ गए। उनके एक चरण में नेत्र था। इस कारण वे अधिक अहंकार रखते थे। वे जब वैकुण्ठ में पहुँचे श्री महाविष्णु लक्ष्मी देवी के साथ शेष शैय्या पर विराजमान थे। भृगु ने विष्णु के वक्षस्थल पर लात मार दी।
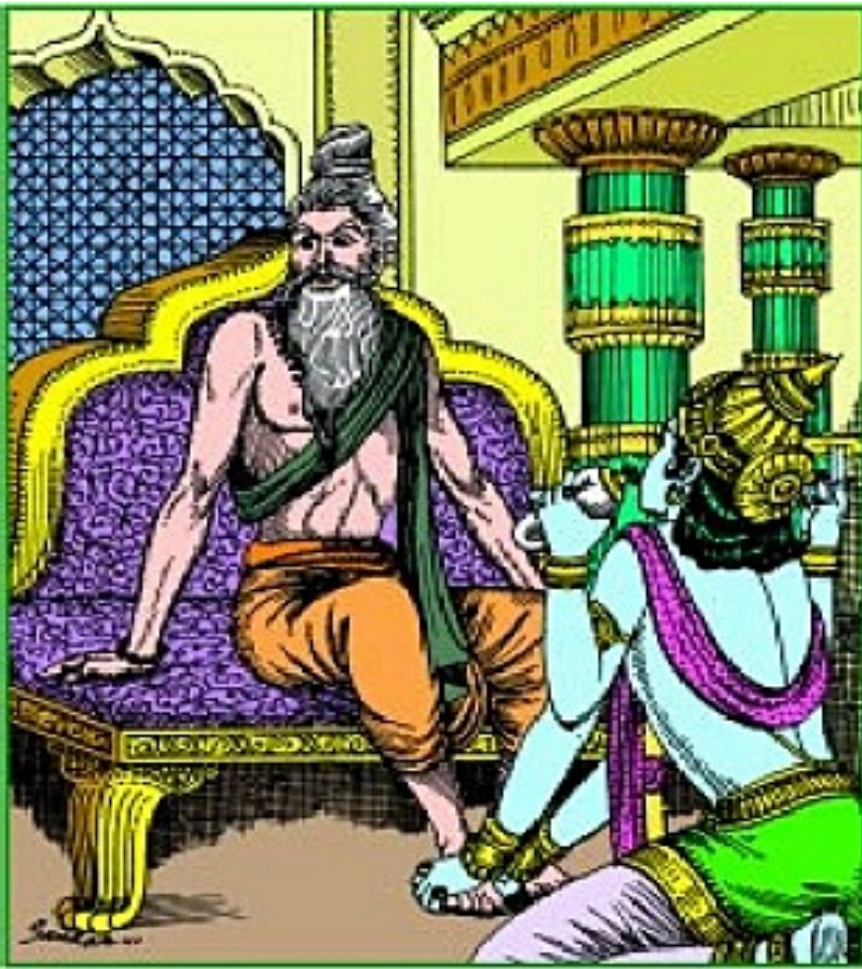
इस पर विष्णु झट उठ खड़े हो गये और विनय पूर्वक बोले, ''महर्षि, आप का मृदु चरण मेरे कठिन वक्ष का आघात पाकर न मालूम कैसा क्षत-विक्षत हो गया होगा।'' यों कहकर उनके चरण दबाने का नाटक रचते हुए उन्होंने उनके चरण तल के नेत्र को दबा दिया। इससे भृगु महर्षि का अहंकार जाता रहा। इस पर भृगु ने विष्णु की स्तुति की और पृथ्वी लोक में लौटकर मुनियों को विष्णु का महत्व बताया।

लक्ष्मी ने सोचा कि मुनि के चरण-स्पर्श से विष्णु अपवित्र हो गये हैं। यों विचार करके वह वैकुण्ठ को छोड़ पृथ्वी लोक में आ गई और तपस्या में लीन हो गई।

इस पर विष्णु लक्ष्मी की खोज में मानव का रूप धर कर पृथ्वी लोक में पहुँचे और अरण्यों के बीच उन की खोज करते हुए श्रीनिवास नाम से वकुला देवी के आश्रम में पहुँचे। वकुला माता विष्णु के कृष्णावतार के समय यशोदा थी।

कृष्णावतार के समय कृष्ण बहुत दिन बाद व्रेपल्ले पहुँच गये थे। उस समय यशोदा देवी ने कृष्ण से कहा था, ''कृष्ण, तुम नहीं जानते कि माता अपने पुत्र का विवाह करने की कैसी प्रबल इच्छा रखती है। मेरी यह इच्छा पूरी नहीं हो पाई।'' इसके उत्तर में कृष्ण ने यशोदा देवी को समझाया था, ''माँ, तुम अगले जन्म में अपनी इस इच्छा की पूर्ति कर सकोगी।''

अब इस जन्म में वकुला देवी श्रीनिवास को अपने पुत्र के रूप में मान कर परमानंदित हुई।

वकुला के पुत्र के रूप में श्रीनिवास प्रसन्नता पूर्वक पलने लगे। एक दिन वे एक उद्यान में टहल रहे थे, तब आकाश राज की पुत्री पद्मावती अपनी सखियों के साथ वन विहार करने के लिए उसी उद्यान में आ पहुँची।

उसी वक्त एक मस्त हाथी चिंघाड़ता हुआ उस वन के अन्दर दौड़ कर आया। राजकुमारी की सखियाँ भय कंपित हो भाग गईं। उस घबराहट में राजकुमारी पद्मावती भागती हुई श्रीनिवास के समीप आकर गिर गई। श्रीनिवास हाथी को रोकते हुए हाथी और पद्मावती के बीच खड़े हो गये। इस पर मस्त हाथी हठात् रुक गया और अपनी सूंड उठा कर उसने श्रीनिवास को प्रणाम किया। इसके बाद श्रीनिवास ने अपने हाथ का सहारा देकर पद्मावती को ऊपर उठाया। पद्मावती और श्रीनिवास के बीच परस्पर अनुराग उत्पन्न हो गया।

पद्मावती अपने पूर्व जन्म में विष्णु को पति के रूप में पाने के लिए तपस्या कर रही थी। उस समय रावण के स्पर्श से क्षुब्ध होकर योगाग्नि में वह भस्मीभूत हो गई थी। वही वेदवती थी। अब वह पद्मावती के रूप में अवतरित हुई थी। इसके बाद वकुला देवी अपने साथ अरुन्धती तथा सप्त ऋषियों को लेकर आकाश राजा के महलमें पहुँची और उन की पुत्री पद्मावती के साथ श्रीनिवास का विवाह करने की कामना व्यक्त की।

इस बीच भीलनी के रूप में जाकर श्रीनिवास ने पद्मावती को बताया कि उसके मन में जिस

वर के साथ विवाह करने की इच्छा है, उसी के साथ उसका विवाह होगा।

पद्मावती और श्रीनिवास का विवाह वैभव पूर्वक संपन्न हुआ। इस के खर्च के लिए कुबेर ने धन, कनक व रत्न भेज दिये थे। विवाह के बाद श्रीनिवास पद्मावती को अपने साथ लेकर चल पड़े।

तपस्या में लीन लक्ष्मी देवी को नारद ने जाकर श्रीनिवास के साथ पद्मावती के विवाह होने का शुभ समाचार सुनाया। इस पर लक्ष्मी आवेश में आ गई और वहाँ से चल पड़ी।

अपने समीप लक्ष्मी देवी को देख श्रीनिवास पद्मावती को वहीं पर छोड़ कर तीव्र गति से सात शिखरों वाली शेषाद्रि पर चढ़ गये और अंतिम शिखर पर पहुँच कर खड़े हो लक्ष्मी देवी के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

लक्ष्मी देवी के समीप आते ही श्रीनिवास उनकी तीक्ष्ण दृष्टि के बदले में मन्दहास करते हुए काले रंग की शिला के रूप में परिवर्तित हो गये। उस मूर्ति के कण्ठ में तुलसी दल की मालाएँ दिव्यत्व को प्राप्त कर शोभायमान हो उठीं। उस मूर्ति के भीतर विष्णु, शिव और शक्ति के अंश दिखाई पड़े। साथ ही अनेक दिव्य रूप प्रत्यक्ष हो उठे।

इसके बाद वे अपने भक्तों को उनके वांछित रूप में दर्शन देते हुए श्रीनिवास, वेंकटरमण, और वेंकटेश्वर के नाम से पुकारे जाने लगे। इस प्रकार विष्णु, सप्तगिरि के अधि देवता के रूप में वहाँ पर स्थापित हो गये।

पद्मावती शेषाद्रि के समीप ही अलमेलु मंगम्मा के रूप में विराजमान हो गई। लक्ष्मी ने जहाँ तप किया था, वहाँ पर वह महालक्ष्मी के रूप में स्थापित हुई। उसी स्थान पर कोलाहपुर निर्मित हुआ और वह लक्ष्मी देवी का निलय बन गया।

अपने प्रति विश्वास रखने वाले भक्तों की विपदाओं से रक्षा करते हुए, पुकारते ही ध्यान देने वाले वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में विष्णु, शेषाद्रि के शिखर पर ''कलियुग के देवता'' के रूप में वैभव पूर्वक विराजमान हो गये। विष्णु की ये सारी लीलाएँ सुन कर मुनिजन परमानन्दित हो उठे।

स्वावलंबन

एक गाँव में रामशर्मा तथा सोमगुप्त नामक दो मित्र रहा करते थे। दोनों गरीब थे। एक दिन दोनों ने यह निर्णय किया कि धन अर्जन करने के लिए अपना गाँव छोड़कर कहीं चले जायें! दूसरे दिन प्रातःकाल दोनों चल पड़े। बड़ी दूर तक यात्रा के बाद जब दोनों काफी थक गये, तब वे एक मुनि के आश्रम के पास लुढ़क पड़े। मुनि ने उन दोनों का सारा हाल जानकर समझाया :

''बेटे! मैंने बड़े ही प्रयास के साथ अनेक विद्याएँ प्राप्त की हैं। तुम में से एक ब्राह्मण है। ब्राह्मण को धन के प्रति मोह रखना उचित नहीं, उसका जन्म तभी सार्थक होगा, जब वह ज्ञान अर्जन कर लोगों में उसे बांट दें और यश प्राप्त करे। दूसरा तो वैश्य है। वह मेरे यहाँ व्यापार के रहस्यों को जान कर धन अर्जन कर सकता है। सच्चा वैश्य धनार्जन के लिए ही नहीं बल्कि जनता की सेवा करने के लिए उपयोगी होता है।''

मुनि की सलाह के अनुसार दोनों मित्रों ने तीन वर्ष तक विद्याभ्यास किया। रामशर्मा ने अनेक शास्त्रों में पांडित्य प्राप्त किया। सोमगुप्त ने व्यापार के रहस्यों को जान लिया। अपने ज्ञान के बल पर रामशर्मा राजा के यहाँ दरबारी पंडित बना। सोमगुप्त ने व्यापार में ख़ूब उन्नति की। चार-पाँच वर्षों में दोनों संपन्न बन गये।

अनेक वर्ष बीत गये। रामशर्मा के एक लड़का हुआ जिसका नामकरण कृष्णशर्मा किया गया। मगर रामशर्मा अपने पुत्र को लेकर चिंता में पड़ गया। वह अव्वल दर्जे का नटखट निकला। पढ़ने में उसकी ज़रा भी रुचि न थी। वह ख़ेल-कूद में सारा समय बरबाद करता था। रामशर्मा ने बड़ी कोशिश की कि उसका पुत्र भी उसके जैसा योग्य बने। पर उसका प्रयत्न बेक़ार गया।

उन्हीं दिनों एक विचित्र घटना हुई। रामशर्मा एक दिन विद्यार्थियों को कुछ श्लोक पढ़ा रहा

पूर्वक प्राप्त कर सकता है। रामशर्मा ने जब यह बात कृष्णशर्मा से कही, तब उसने पूछा, "विद्याभ्यास किसलिए करना है?"

"लोगों के द्वारा पूजा प्राप्त करने, धन कमाने के लिए भी विद्या की नितांत आवश्यकता है!" रामशर्मा ने समझाया।

"लोग मेरा आदर इस समय भी इसलिए करते हैं कि मैं एक महा पंडित का पुत्र हूँ। मैं ब्राह्मण हूँ, इसलिए मेरी पूजा करते हैं। साथ ही एक धनवान का पुत्र हूँ। इसलिए मुझे अब कमाना क्या है?" कृष्णशर्मा ने उल्टा सवाल किया।

वह इस बात पर विचार कर ही रहा था कि अपने पुत्र केमन को कैसे बदले, इतने में ही सोमगुप्त उसके घर आया। दोनों की बातचीत में यह बात प्रकट हो गई कि सोमगुप्त का पुत्र वसुगुप्त भी इसी प्रकार लापरवाह है और जब भी उसके पिता ने उसको सही रास्ते पर लाने का प्रयत्न किया वह यही जवाब दे रहा है कि "मैं धनी का पुत्र हूँ। मुझे धन कमाने की क्या आवश्यकता है?"

दोनों मित्रों ने विचार करके एक योजना बनाई। उस योजना के अनुसार सोमगुप्त अपने पुत्र वसुगुप्त को रामशर्मा के घर पर छोड़ अपनी पत्नी के साथ व्यापार के काम पर नगर छोड़कर चला गया। जाते वक़्त अपने पुत्र की सेवा करने के लिए दो नौकरों को भी छोड़ गया।

कृष्णशर्मा और वसुगुप्त के बीच धीरे धीरे गहरी मित्रता हो गई।

दो मास बीत गये। रामशर्मा ने एक दिन

था। वे श्लोक कठिन थे, इसलिए कई बार समझाने पर भी विद्यार्थी उन्हें समझ नहीं पा रहे थे। आखिर थक कर विश्राम के लिए रामशर्मा घर के भीतर चला गया।

अपने पिता को विद्यार्थियों को पढ़ाने में श्रम उठाते कृष्णशर्मा ने देखा। कृष्णशर्मा अपने पिता के घर के भीतर जाते ही रामशर्मा के आसन पर बैठकर स्वयं उन्हें पढ़ाने लगा। आश्चर्य की बात थी कि रामशर्मा के समझाने पर जो श्लोक विद्यार्थियों की समझ में नहीं आये, वे कृष्णशर्मा के समझाने पर आसानी से समझ में आ गये।

भीतर से रामशर्मा उस दृश्य को देख चकित रह गया। उसने सोचा कि उसका पुत्र मूर्ख नहीं है। उसे स्मरण शक्ति भी प्राप्त है। विद्याभ्यास करने पर वह बड़े-बड़े शास्त्रों का ज्ञान सरलता

वसुगुप्त को बुलाकर कहा, ''तुम्हारे पिता ने धन की माँग करते ख़बर भेजी है। तुम अपना मकान बेचकर उन्हें धन भिजवा दो।'' पर वसुगुप्त ने कोई ध्यान न दिया।

एक महीना और बीत गया। एक दिन रामशर्मा के यहाँ एक व्यक्ति ने आकर समाचार दि या, ''सोमगुप्त का जहाज़ डूब गया है। उसके साथ सोमगुप्त, उनकी पत्नी और उनकी सारी संपत्ति भी डूब गई है। मैं उन्हें बड़ी मुश्किल से किनारे पर ले आया और अपने घर पहुँचा दिया, मगर दुर्भाग्य से वे जीवित नहीं रह सके।''

यह समाचार सुनते ही वसुगुप्त रा े प ड़ा। रामशर्मा ने उसे सांत्वना दी। मगर उसने एक बात स्पष्ट कह दी, ''मैं तुम्हारे पिता की तरह कोई बड़ा व्यापारी नहीं हूँ। तुम्हारा भार उठाना मेरे लिए संभव नहीं है। इसलिए तुम अपनी जिम्मेदारी आप ही संभाल लो।''

वसुगुप्त रोष में रामशर्मा के घर से चल पड़ा। मगर उसे ठहरने के लिए कहीं जगह न मिली। किसी ने खाना तक नहीं खिलाया। इसलिए वह अपने स्वाभिमान को तिलांजलि देकर रामशर्मा के घर लौट आया और खाना खिलाने की प्रार्थना की। रामशर्मा ने वसुगुप्त को खाना खिलाया, साथ ही यह भी बताया कि यह क्रम ज़्यादा दिन तक नहीं चलने का।

यह बात सुनने पर कृष्णशर्मा को बड़ा क्रोध आया। उसने अपने पिता से पूछा, ''क्या आप अपने मित्र के पुत्र की इतनी भी सहायता नहीं
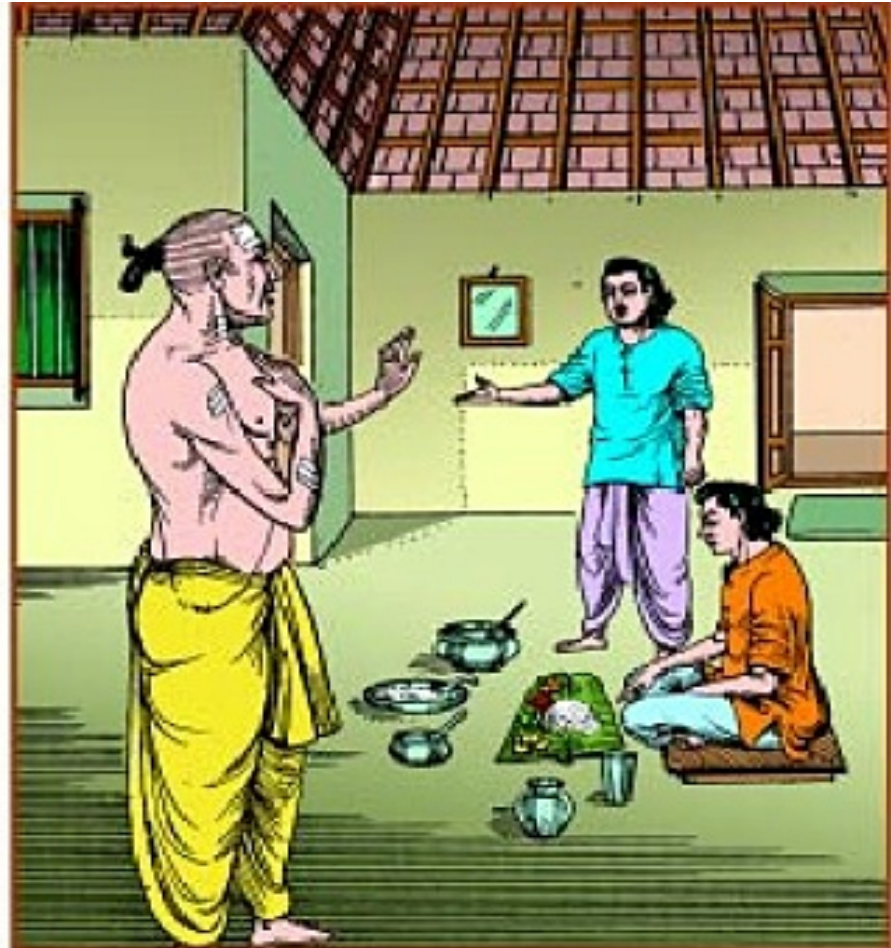
कर सकेंगे?'' इसके उत्तर मेंरामशर्मा ने यों कहा, ''सोमगुप्त मेरे मित्र हैं। अगर वे कठिनाइयों में होते तो मैं अवश्य उनकी मदद करता। लेकिन वसुगुप्त के साथ मेरा कोई संबंध नहीं है।''

''वसुगुप्त आप के लिए कुछ नहीं हो सकता, मगर वह मेरा मित्र है। क्या मेरे मित्र को इस घर में आदर नहीं मिल सकता?'' कृष्णशर्मा ने पूछा।

''तुम्हारा बड़प्पन क्या है? '' रामशर्मा ने लापरवाही से पूछा।

''भगवान की अर्चना करने मात्र से पुजारी का भगवान के समान लोग आदर देते हैं। मैं महापंडित रामशर्मा का पुत्र हूँ। क्या यह मेरे लिए बड़प्पन की बात नहीं हो सकती?'' कृष्णशर्मा ने फिर पूछा।

रामशर्मा ने पल भर सोचकर कहा, ''मैं तुम्हारे

सवाल का ज़वाब ज़रूर दूँगा, लेकिन इसके पहले तुम्हें एक काम करना होगा। तुम्हारी तथा वसुगुप्त की सेवा करनेवाले नौकरों को बुलवा कर उनके द्वारा दो दिन तक वसुगुप्त की सेवा करवा दो। फिर मुझ से मिलो।''

कृष्णशर्मा अत्यंत उत्साह पूर्वक वहाँ से चला गया। इसके पूर्व वे लोग पैसे की मांग किये बिना समस्त प्रकार की सेवाएँ करते थे। लेकिन अब वसुगुप्त के प्रति उलाहना भरी बातें कहीं और यहाँ तक बताया कि ऐसे दरिद्र की सेवा हम आइंदा नहीं करेंगे।

उनका उत्तर सुनकर कृष्णशर्मा चकित रह गया और अपने पिता के पस लौटकर सारा वृत्तांत उसे सुनाया।

रामशर्मा ने मंदहास करते हुए कहा, ''नौकरों ने सही उत्तर दिया है। वसुगुप्त का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है। जब तक वह अपने पिता के साये में पला, तब तक उसके पिता का धन उसका रक्षक था। उस धन के समाप्त होते ही वह भी एक साधारण व्यक्ति बन गया है। तुम मेरे पांडित्य के द्वारा आदर प्राप्त कर रहे हो। मेरी संपत्ति केवल पांडित्य है। वह संपत्ति अगर तुम्हें प्राप्त न हुई, तो तुम्हारी भी यही हालत होगी। स्वावलंबन के द्वारा जो कुछ अर्जित किया जाता है, वही उसकी अपनी सम्पत्ति होती है।''

''स्वावलंबन आवश्यक है। इसलिए आप अपने मित्र की जो सहायता कर सकते हैं, वह मैं अपने मित्र की सहायता नहीं कर पाता हूँ।'' कृष्णशर्मा ने कहा।

''तुम और तुम्हारे मित्र मेरे बताये स्थान पर जाकर कुछ वर्ष विद्याभ्यास करो।'' यों समझाकर रामशर्मा ने अपने विद्याभ्यास का विवरण देकर उस मुनि के आश्रम का परिचय दिया।

कृष्णशर्मा तथा वसुगुप्त दो वर्ष तक मुनि के आश्रम में विद्याभ्यास करके लौट आये। वसुगुप्त का पिता न केवल जीवित था, बल्कि उसने अपनी जायदाद दुगुनी कर ली थी। आख़िर उन दोनों ने जान लिया कि रामशर्मा तथा सोमगुप्त ने मिलकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने के लिए यह नाटक रचा है।

26
आर्य
वीरसिंह तथा सेनापति जब्बर सेन, जो शान्ति पुर के पुराने शाही ख़ज़ाने को रात में लेने आये थे, निश्चय करते हैं कि वे ख़ज़ाने के धन को लेने के लिए दिन में आयेंगे। वसन्त और आर्य कुछ स्वयंसेवकों की मदद से वहाँ के दो पहरेदार सैनिकों के मुँह बन्द करने के बाद ख़ज़ाने के धन को वहाँ से हटा देते हैं। वीर सिंह और जब्बर सेन ख़ज़ाने को खाली पाकर भौंचक रह जाते हैं। एक तीर के साथ आये सन्देश में लिखा है कि यह धन प्रजा का है। सन्देश "राजकुमार आर्य" की ओर से है।
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
चित्र : गाँधी अय्या
दोनों सैनिक वीरसिंह के पास पकड़ कर लाये जाते हैं।
महाराज! इन्हें राजकुमार आर्य के बारे में कोई जानकारी नहीं है।
मेहरबानी करके माफ कर दीजिये।
फिर इन्हें यहाँ क्यों लाया गया?
इन्हें जाने दो।
जब्बर, शाही ख़ज़ाने को लूटनेवाले अवश्य विद्रोही ही होंगे।
और राजकुमार आर्य उनका नेता होगा। सन्देश में...
हम और आदमियों के रखने तक इन्तज़ार नहीं कर सकते। हम उन पर अचानक हमला कर देंगे।
लेकिन महाराज, हमारे पास काफी आदमी नहीं हैं...
वह कौन है मुझे इसकी परवाह नहीं है। अमृतपुर में हर हालत में विद्रोहियों का खात्म हो जाना चाहिये।
याद रखो, हमारी योजना गुप्त रहनी चाहिए।
हाँ महाराज, मैं कमानों को कह दूँगा कि वे अपने आदमियों को महल के सामने इकट्ठा करें।

वसन्त का भेजा गया एक स्वयंसेवक जयानन्द से मिलने आता है।
क्या सन्देश लाये हो, मनोहर?
वीरसिंह कल अमृतपुर पर हमला करने जा रहा है।
तुमने क्या यह सुना, आर्य? इसे रोकना पड़ेगा।
हम लोग पहले ही शान्तिपुर पहुँच चुके हैं।
वसन्त कहाँ है?
उन्होंने आर्य को साथ लाने के लिए कहा है। आर्य कौन हैं?
यही आर्य है!
अब क्योंकि यह मुझे लेने आया है, मुझे इसके साथ जाने दीजिये, बाबा!
राज्य को अपहारियों और अत्याचारियों के चंगुल से मुक्त करना ही होगा।
माता कनकदुर्गा तुम्हारी रक्षा करेगी, आर्य। जाओ और विजयी होकर लौटो!
आप के आशीर्वाद से, बाबा!
जयानन्द जब आर्य और मनोहर को जाते हुए निहारते हैं, मिनी उड़कर अन्दर आती है।
क्या तुमने मेरा सन्देश दे दिया, मिनी?

तोती स्वामी के कन्धे पर बैठ जाती है।
क्या बाबू आ रहा है?
सरदार सुखदेव आश्रम में पहुँच जाते हैं।
मैं आ गया बाबा!
अन्दर आओ बाबू, एक ख़बर है।
आर्य और वसन्त ने वीरसिंह को पुराने शाही ख़ज़ाने को लूटने से रोक दिया है। वह समझता है कि यह धन विद्रोहियों के हाथ में है।
उसकी योजना क्या है? आर्य कहाँ है?
वीरसिंह विद्रोहियों को कुचलने के लिए अमृतपुर पर आक्रमण करना चाहता है। वसन्त और उसके स्वयंसेवक शान्तिपुर पहले ही आ चुके हैं। वे चाहते हैं कि आर्य उनका नेतृत्व करे।
तब मुठभेड़ होगी।
मुनि अचानक गहरे ध्यान में जाते हैं।
आशा है, आर्य को...
सरदार जाने के लिए खड़ा हो जाता है।
आर्य की चिन्ता न करो। उसे सफलता मिलेगी। मेरी सलाह है कि वीरसिंह चला जाये तब तुम अपने आदमियों के साथ महल को चारों ओर से घेर लो।
मैं वैसा ही करूँगा बाबा। क्या आप को राजकुमार की तावीज़ याद है?
इसे हमें कब उसे लौटा देना चाहिये?
सब ठीक समय पर। वह दिन दूर नहीं है जब आर्य को उसके सारे देय अधिकार वापस मिल जायेंगे।

बाबा, सुकन्या हमेशा राजकुमार के कुशल-मंगल के लिए प्रार्थना करती रहती है।
वह जहाँ भी होगी, राजकुमार उसकी रक्षा करेगा।
मुनि सरदार को बिदा करते हैं।
मैंने जो कहा है, उसे याद रखना।
जी हाँ, मैं महल को अधिकार में ले लूँगा।
आर्य को वसन्त के पास लाया जाता है।
मैं आ गया, वसन्त।
हम लोग बड़ी उत्सुकता से आप की प्रतीक्षा कर रहे थे, भाई।
बीर सिंह और उसके सैनिक नदी पार करने से बचने के लिए इस मार्ग से आ रहे हैं !
हमें वीरसिंह और उसके सेनापति को सबसे अलग कर देना होगा।
एक स्वयंसेवक वहाँ आता है।
वसन्त, मैंने अभी कदमों की आवाज़ सुनी। सैनिक पहाड़ की घाटी के निकट आ रहे हैं।
हम वहीं उनका सामना करेंगे।
आदमियों से घाटी पर फैल जाने कहो।
वसन्त और आर्य स्वयंसेवकों की अपने-अपने स्थान पर तैनात होते हुए निगरानी कर रहे हैं।
आ जाओ वसन्त, अब जलते हैं !
मैं तैयार हूँ, भाई!
-क्रमशः

हमारे देश के आश्चर्यः

ताजमहल

ताजमहल की गिनती हमारे देश के आश्चर्यों में सबसे पहले होती ही है और संसा र के आधुनिक आश्चर्यों में भी इसकी गणना है।

अकबर के समय में मुगल सम्राटों का निवास स्थल दिल्ली से आगरा बदल गया। उसके बाद, अकबर के पोते, शाहजहाँ की पत्नी, मुमताजमहल ने १६३१ में मरते समय अपनी आखिरी इच्छा प्रकट की कि शाहजहाँ फिर शादी न करे और उसका नाम अमर करने के लिए कोई उपयुक्त कार्य करे। शाहजहाँ ने उसकी इन दोनों इच्छाओं को पूरा किया। उसने फिर शादी नहीं की। और अपनी पत्नी की अमर स्मृति में आश्चर्यजनक ताजमहल बनवाया।

इसके निर्माण के बारे में एक प्राचीन फारसी ग्रन्थ में एक दन्तकथा है। ताजमहल के निर्माण के लिए अपनी कल्पना के अनुरूप नक्शा तैयार करनेवाले की शाहजहाँ ने सारे देश में खोज करवाई। आखिर उसको एक वृद्ध तपस्वी मिला। उसके कहने पर एक कारीगार को कोई बूटी खिलाई गई। वह कारीगर ताजमहल का नक्शा बनाकर बेहोश हो गिर गया।

कुछ भी हो, ताजमहल के निर्माण में २२ साल लगे। असंख्य आदमियों ने उसके लिये काम किया। तीन करोड़ रुपये का खर्च हुआ। १६५३ में वह पूरा हुआ। १६६६ में शाहजहाँ मर गया। उसकी कब्र भी पत्नी की कब्र के पास ताजमहल में ही बनाई गई।

ताजमहल सफेद संगमरमर का बना है। उसकी चौड़ाई १३० फुट है। ऊँचाई करीब २०० फुट। यह जमुना नदी के किनारे है। इसके पास सुन्दर बाग-बगीचे हैं। चान्दनी में इसकी शोभा का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सक ता।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

व्हेल अस्थियों पर नक्काशी

बहुत पहले १९वीं शताब्दी में, जब बिना इंजिन के जलपोत होते थे और नाविकों को अपने गन्तव्य पर पहुँचने के लिए हवाओं की मर्जी पर निर्भर करना पड़ता था तथा जब व्हेल के शिकार का खूनी धन्धा बड़े जोर-शोर से चल रहा था, तब नाविकों को प्रायः कई दिनों तक व्हेल के शिकारी जलपोतों पर ही रहना पड़ता था।

तब ऊबन से बचने के लिए नाविक प्रायः व्हेल अस्थियों पर नक्काशी करते थे। इन्हें स्क्रिमशॉ कहा जाता था।

स्क्रिमशॉ यानी व्हेल अस्थियों पर नक्काशी अनेक चरणों में की जाती थी। पहले, व्हेल अस्थि पर इस
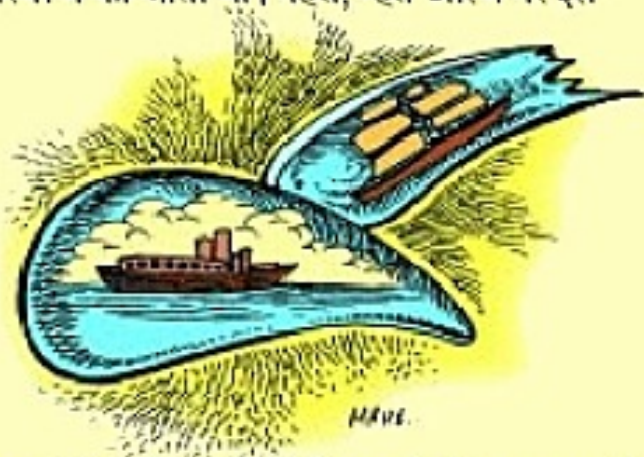
तरह पॉलिश की जाती थी कि आइने की तरह चमकने लगे। फिर इस पर तेज चाकू अथवा सूई से चित्र की खुदाई की जाती थी। तब खाँचे को रंगीन स्याही से भरा जाता था तथा अतिरिक्त स्याही को सतह पर से साफ कर दिया जाता था।

ये नक्काशियाँ ऐतिहासिक महत्व रखती हैं क्योंकि उनसे पता चलता है कि व्हेल के शिकारी -जलपोतों पर का जीवन कैसा था। व्हेल अस्थि पर निपुण नक्काशीकर्त्ता को स्क्रिमशैण्डर कहते हैं।

तुम्हारा प्रतिवेश

एक-में-चार मछली

जब तुम "पुर्तगाली-मैन-ऑफ-वार" पढ़ते हो तो क्या समझते हो? यदि युद्ध पोत समझा है तब फिर से सोचो। यह मैन-आफ-वार समुद्र के अन्दर भी पाया जाता है। लेकिन यह खतरनाक समुद्री जानवर है जो गर्म समुद्रों में निवास करता है।

यह जानवर जेली फिश परिवार का है और वैज्ञानिकों का कहना है कि यह एक ईकाई का पशु नहीं है। इसके विपरीत यह अत्यधिक परिष्कृत पोलिप के चार प्रकारों की एक कॉलोनी है। पोलिप, कोलनटरेट पशु ग्रूप का प्राणी है, जिसका शरीर बेलनाकार होता है और स्पर्शिकाओं से घिरा हुआ एक मुख होता है।

मैन-ऑफ-वार में रीढ़ की हड्डी नहीं होती और यह समुद्र की सतह पर तैरता हुआ दिखाई देता है। जल की सतह के साथ वह बहता हुआ हवा को पकड़ने के लिए समय-समय पर अपना आकार बदलता रहता है।

यह प्राणी अपने शिकार को अपने लम्बे, नीले सूत्राकार स्पर्शकों से डंक मारता है।

डंक से जलन महसूस होती है और लसीका ग्रंथि में शोथ हो जाता है। अधिक गम्भीर अवस्था में सांस लेने में कठिनाई हो सकती है और हृदय अवरोध भी हो सकता है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

बुक ट्रैक

जब तुम कोई पुस्तक उठाते हो और पीछे के आवरण पर नज़र डालते हो तब तुम एक संख्या देखते हो जो कुछ इस प्रकार का होता है- ISBN-80-60001-33-4। क्या तुम्हें विश्वास होगा यदि कोई कहे कि यह पुस्तक का 'पता' है?

विश्वास करो या न करो, पर यह सत्य है। आई.एस.बी.एन. अथवा इण्टरनेशनल स्टैण्डर्ड बुक नम्बरिंग एक अंकन प्रणाली है जिसका प्रयोग पुस्तकों के क्रमांकन के लिए किया जाता है।

जब कोई प्रकाशक किसी पुस्तक की कुछ प्रतियाँ छापता है, तब वह उसकी पहचान के लिए एक विशेष नम्बरकोड का प्रयोग करता है। वह नम्बरकोड दस अंकों का होता है।

प्रथम अंश उस देश की पहचान करने में मदद करता है जहाँ पुस्तक प्रकाशित की गई है। दूसरा अंश प्रकाशक क ा उपसर्ग होता है। तीसरा अंश शीर्षक की पहचान करानेवाला होता है, जबकि चतुर्थ अंश चेक डिजिट कहलाता है।

अपने भारत को जानो

अपने स्वाधीनता संग्राम के कुछ ऐतिहासिक घटनाओं को याद करें!

१. जनवरी २६ को गणतंत्र दिवस के रूप में कैसे चुना गया?

२. ब्रिटिश पार्लमिण्ट ने कब भारतीय स्वाधीनता अधिनियम स्वीकृत किया?

३. बम्बई में रॉयल इण्डियन नेवी के विद्रोह को आम तौर पर ऐसी घटना माना जाता है जिसने भारत में अंग्रेज़ी सरकार की जड़ को हिला दिया। यह कब हुआ?

४. कांग्रेस का पहली बार मुस्लिम अध्यक्ष कब चुना गया? वह कौन था?

५. हमारे स्वाधीनता संग्राम की किस घटना ने वायसराय लॉर्ड अरविन को उसे 'तम्बू में तूफान' कहने के लिए भड़काया था?

(उत्तर पृष्ठ ७० पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

**क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?**

MAHANTESH C. MORABAD

SPHOORTHY REDDY V.H.

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, प्लाट नं. ८२ (पु.न.९२),
डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०००९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर
१००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

विजयी प्रविष्टि

**अनूप उत्तमराव चौधरी
सौ. ज्योति चौधरी,
प्रधान डाकघर,
औरंगाबाद (महाराष्ट्र)- ४३१००१**

**बनठन कर चली कहाँ
खेलों में है स्वर्ग यहाँ**

"अपने भारत को जानो" प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

१. भारत का संविधान २६ जनवरी १९५० से लागू किया गया।
२. दिनांक १८ जुलाई १९४७।
३. फरवरी १९४६।
४. मद्रास में आयोजित १८८७ सम्मेलन- बद्रुद्दीन तैयबजी।
५. गाँधीजी की १९३० की डांडी यात्रा।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

तेल की कहानी

वीना की विज्ञान-पाठ्य पुस्तक में पेट्रोलियम तथा इसके फायदे पर एक अध्याय है। क्लास को रोचक बनाने के लिए शिक्षक ने एक तेल रिफाइनरी के एक इंजीनियर मि. दास को वार्ता देने के लिए निमंत्रित किया है । ''हमलोग लगभग प्रतिदिन 'ऊर्जा' शब्द सुनते हैं,'' मि. दास आरम्भ करते हैं। ''ऊर्जा के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। यह हमारे शरीर की वृद्धि में सहायक होता है।'' थोड़ी देर रुक कर वे वार्ता ज़ारी रखते हैं, ''हमें कई स्रोतों से ऊर्जा मिलती है। लेकिन सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत है तेल। तेल धरती की सतह से नीचे गहराई में जमा रहता है।''

''लेकिन तेल वहाँ कैसे आया, अंक ल?'' राहुल प्रश्न क रता है। मि. दास मुस्कुराते हैं और कहते हैं, ''लाखों वर्ष पहले, धरती पर केवल पेड़-पोधे और पशु-पक्षी निवास करते थे। जब वे मर जाते थे तब वर्षों बाद मिट्टी और चट्टानों के तहों के नीचे उनके अवशेष दब जाते थे। इन तहों के ताप और दबाव से अवशेष एक तरल पदार्थ में बदल जाते थे जिसे हम कच्चा तेल कहते हैं।''

''यह तेल बाहर कैसे निकाला जाता है?'' वीना जानना चाहती है।

''तेल का सर्वप्रथम अनुसंधान तब हुआ जब थोड़ी मात्रा में सतह पर रिसने लगा। आज बड़ी-बड़ी बरमा अनियों के साथ वृत्ताकार लेत कूप धरती की सतह को छेद कर गहराई तक जाते हैं जहाँ उन्हें गैस और तेल का भण्डार मिलता है। दुर्भाग्यवश भारत के पास अपना बहुत कम तेल है। इसलिए सऊदी अरब जैसे तेल के धनी राष्ट्रों से जितना हम खरीद सकते हैं, उतने पर ही हमें निर्भर रहना पड़ता है,'' इतना कहकर मि. दास वार्ता समाप्त करते हैं। ''अतः अब क्या तुम समझाते हो कि क्यों इसे फिज़ूल खर्च नहीं करना चाहिये?''

''जी हाँ, अंकल, हम समझते हैं,'' सभी छात्र एक साथ बोलते हैं।

CHANDAMAMA(HINDI), AUGUST 2005
REGD. NO. TN/PMG(CCR)-594/03-05
REGD. WITH REGISTRAR OF NEWSPAPER FOR INDIA NO. 1087/57
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT NO.381/03-05 FOREIGN WPP NO.382/03-05